वर्ष 50 ❖ अंक 02 ❖ फरवरी 2023

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 50 ● अंक 02 ● फरवरी 2023 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु
एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार,
ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन
7. बाबा हरदेव सिंह जी के पावन वचन
12. चित्रकथा
22. क्या आप जानते हैं?
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया

कविताएं

11. भरत समान बनो
: रामसेवक शर्मा

17. बसन्त ऋतु आई
: सुमेश निषाद

17. आया बसन्त
: डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

25. हरी सब्जियां
: मंजु दवे

27. लो आया बसन्त
: राजेश पुरोहित

39. हम कलियां भारत उपवन की
: रामचरण 'आजाद'

39. तो कहलायेंगे महान
: सत्य नारायण

46. मातृभाषा
: गौरीशंकर वैश्य

46. निराली है माँ
: महेन्द्र सिंह शेखावत

कहानियां

8. समय पर उचित साहस
: राधेलाल 'नवचक्र'

9. सुन्दरवन में बसन्त उत्सव
: हरजीत निषाद

18. परियां और तालाब
: दिनेश 'दर्पण'

24. परिश्रम करने वाले को ही मिलता है फल
: शिवनारायण सिंह

28. सुबह का भूला
: राजेन्द्र निशेश

33. घाटी और पहाड़
: राधेलाल 'नवचक्र'

40. गुरुभक्त उपमन्यु
: नित्या त्रिपाठी

विशेष/लेख

16. घड़ियाल
: अंकुर श्रीश्रीमाल

20. पानी में छिपे भयंकर शैतान
: संजीव कुमार

23. पहेलियां
: रामअवध राम

30. लाल पांडा
: परशुराम शुक्ल

42. समुद्री गाय
: किरण बाला

43. पक्षियों का दृष्टि ज्ञान
: जयेन्द्र

आओ सोचें

सोचना अर्थात् विचार करना हम सभी के जीवन का अभिन्न अंग है। जब मन में कोई भी विचार आता है तो बुद्धि उसी समय निर्णय ले लेती है और हम उसी ओर अपनी सोच को दिशा दे देते हैं। कुछ लोग बहुत सोचते हैं और एक विचार का मन्थन ही करते रहते हैं। जब हम छोटे बच्चे थे तब कोई हमें कुछ भी कह देता था पर हम उसका बुरा नहीं मानते थे। अगर बुरा मान भी लिया तो पलभर में उसे भूल भी जाते थे। भूल जाने का मतलब यही होता था कि हम अपने मन पर उसका असर ग्रहण नहीं करते थे। जैसे-जैसे हमारी बुद्धि विकसित होती जाती है, हम विचारों को इकट्ठा करते रहते हैं। दूसरों की बातों का, छोटी-छोटी घटनाओं का, अच्छे-बुरे का निर्णय करते रहते हैं। यही छोटी-छोटी बातें हमारे कार्य में बाधा भी बन जाती हैं और हम अपने समय एवं ऊर्जा को भी व्यर्थ कर बैठते हैं।

इसी प्रकार एक लड़का अपनी इस आदत से इतना परेशान हो गया कि उसके साथ कोई छोटी-सी बात या घटना हो जाए तो वह हमेशा उसी का चिन्तन करता रहता था। किसी ने कुछ कहा तो उसको कैसे जवाब देना है, उसको कैसे सबक सिखाना है इत्यादि। वह विचारों में इतना खो जाता था कि बाकी कोई भी काम वह ठीक ढंग से नहीं कर पाता था। इससे उसके अपने दोस्तों से भी सम्बन्ध खराब होते चले गये। ऐसा कोई एक बच्चा या लड़का नहीं है; हम सभी कभी न कभी ऐसी बातों का सामना भी करते रहे हैं और उनका शिकार भी होते रहे हैं। इसी बात का समाधान करने के लिए वह लड़का अपने शिक्षक के पास पहुँचा और अपनी सारी समस्या उनके सामने रखी।

शिक्षक महोदय कक्षा में आए और उस बच्चे को बुलाकर सामने पड़ा पानी का गिलास उसे पकड़ा दिया और बच्चे ने भी आसानी से उसे पकड़ लिया। शिक्षक ने कहा कि इस गिलास को ऐसे ही मेरे 'कक्षा पीरियड' का समय समाप्त होने तक पकड़े रखना है और शिक्षक महोदय ने पढ़ाना आरम्भ कर दिया। वह लड़का पांच-दस मिनट तक तो गिलास को आसानी से पकड़कर खड़ा रहा फिर वह बेचैन होने लगा। वह मन ही मन सोचने लगा कि यह गिलास कब शिक्षक वापस लें और मैं इस मुसीबत से छूटूं। वह तो अब शिक्षक को भी मन ही मन कोस रहा था। पीरियड समाप्त होते ही शिक्षक ने उस बच्चे को बुलाया और गिलास को मेज पर रखने को कहा। शिक्षक के बोलने से पहले ही लड़के ने कहा– 'सर जी, मेरा हाथ अकड़ गया है और दर्द भी करने लगा है।' परन्तु शिक्षक ने कहा कि अगर तुम्हें इसी गिलास को स्कूल के शुरू होते ही पकड़ा दें और स्कूल की छुट्टी होने तक पकड़ना पड़े तो क्या करोगे? तपाक से वह लड़का बोला– 'इससे तो मेरी हालत और बिगड़ जाएगी।' इस पर शिक्षक बोले, 'जाओ और बैठ जाओ। यही तुम्हारी समस्या का समाधान है।'

शिक्षक ने आगे बताया– जीवन में परेशानियां तो आती ही रहती हैं। उनके बारे में सोच-विचार भी आवश्यक है परन्तु उनको पकड़कर रखेंगे तो ये और भी अधिक परेशान करेंगी और अगर हम सारा समय इसी प्रकार व्यतीत करेंगे तो हमारी हालत भी खराब हो जाएगी क्योंकि हमारी सारी शक्ति और ऊर्जा उसी तरफ लग जाती है जहाँ भी हमारा ध्यान जाता है। समस्या को अपने ऊपर इतना हावी न होने दें कि हमारा जीवन हमारे लिए ही समस्या बन जाए। हमें बुद्धि का प्रयोग करना है लेकिन विवेकपूर्ण होकर। सोच-विचार अवश्य करें क्योंकि 'बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय।' आज से हम सभी अपनी सारी शक्ति, समय एवं ऊर्जा को अपनी प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने में लगाएं और अगर दूसरों की बातों और घटनाओं से कुछ सीख सकें तो सीखें परन्तु अपनी शक्ति को व्यर्थ न गंवाएं और स्वयं की उन्नति स्वयं करें।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 268

पतित पुनीत पवित्तर करदै इक्को इक एह नाम तेरा।
थां निथावें नूं है मिलदी उच्चा सुच्चा धाम तेरा।
जिसदा वैरी है जग सारा ओहदा हैं रखवारा तूं।
दीन दुखी ते बदकिस्मत दा इक्को इक सहारा तूं।
जिस ते नज़र सुवल्ली कर दएं वारे न्यारे हो जांदे ने।
अवतार मिले जे नाम सहारा अपणे सारे हो जांदे ने।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि यह प्रभु-परमात्मा एक है। इस एक प्रभु का नाम पतित को भी पावन करने वाला है। यह गिरे हुए को उठाने वाला है। जिसको कोई नहीं अपनाता उसे भी यह अपनाने वाला है। इस ऊँचे और सबसे पवित्र प्रभु का धाम ऊँचे से ऊँचा है। यह सबसे ऊँचा और सबसे पवित्र है। जिसका कोई सहारा नहीं है, यह उसका भी सहारा है। जिसका कोई ठिकाना नहीं है यह दयालु उसे भी अपने निज धाम में स्थान दे देता है। परमात्मा का निज धाम इसको अंग-संग जानकार इसका अहसास करना है।

जो बेघर है जिसका कोई घर द्वार नहीं है उसका घर भी यह प्रभु है। यह 'निथावों का थां', 'बेघरों का घर' है। यह सबका पालक, सबका रक्षक है। अगर किसी कारणवश किसी इन्सान का वैरी सारा संसार हो जाए, सब उसके शत्रु बन जाएं तो भी उसकी रक्षा करने वाला भी यही प्रभु है। दीन-दुखी लोगों का सहारा भी यही है और खराब किस्मत वालों की किस्मत भी यही प्रभु है। किस्मत का खराब होना उस अवस्था को कहा जाता है जब इन्सान गुरमत को त्यागकर, मनमत अपना लेता है और अपनी मनमर्जी के कार्यो के कारण परेशानियों से घिर जाता है। ऐसे बदकिस्मत इन्सान को दर-बदर भटकना ही पड़ता है और उसे अगर संसार में किसी का सहारा मिलता भी है तो वह इस प्रभु का सहारा ही है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा बहुत बड़ा है और इसका नाम भी सबसे बड़ा है। इसका सहारा बहुत बड़ा है। जिसको इसका सहारा मिल जाता है उसके लिए फिर सहारे ही सहारे हैं। उसके लिए सभी अपने हो जाते हैं। सभी उसकी मदद करने के लिए तत्पर रहते हैं और उसके लिए कोई बेगाना भी नहीं रह जाता। यह प्रभु जिसके ऊपर अपनी कृपादृष्टि डाल देता है, यह जिसे अपना बना लेता है उसके वारे-न्यारे हो जाते हैं। उसके जीवन में सदैव के लिए खुशहाली आ जाती है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं गिरे हुए को उठाने वाला, बदकिस्मतों की किस्मत संवारने वाला, शत्रुओं से घिरे हुए की रक्षा करने वाला यह प्रभु ही है। इसके नाम का आधार लेकर इन्सान जहाँ संसार के सभी दुखों से बच जाता है वहीं वह अनेक प्रकार के सुखों से भरपूर हो जाता है, सभी उसके हो जाते हैं।

भावार्थ : हरजीत निषाद

सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन

❖ सेवा में मन का भाव बेहतर होना चाहिए। मर्यादित रूप में सेवा हो और इसमें नम्रता, सत्वचन करने की भावना होनी चाहिए।

❖ रूहानियत और इन्सानियत के संगम से ही इन्सान में मानवीय गुण आ सकते हैं।

❖ जिस प्रकार एक पत्ता नदी के बहाव के अनुसार ही बहता चला जाता है, इसी प्रकार भक्त भी परमात्मा की इच्छा अनुसार जीवन को समर्पित करता चला जाता है।

❖ ब्रह्मज्ञान की रोशनी जीवन में समदृष्टि का भाव प्रबल करती है। जीवन औपचारिकताओं से ऊपर उठकर वास्तविक हो जाता है। हमारी कमियां बताने वाला इन्सान परम मित्र लगने लगता है क्योंकि उसने हमें सुधार का अवसर दिया है।

❖ जिन्दगी का हर पल हम सिर्फ निरंकार-प्रभु-परमात्मा का शुकराना करते हुए बिताएं, न कि शिकवा करते हुए।

❖ किसी के प्रति मन में वैर, ईर्ष्या का भाव न रखते हुए सबके प्रति सहनशीलता एवं नम्रता जैसे गुणों को अपनाते हुए सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनना होगा।

❖ जब ब्रह्मज्ञानी भक्त अपने मन को परमात्मा के साथ जोड़ लेता है तब उस पर दुनियावी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। फिर वह हर परिस्थिति में संतुलित भाव से व्यवहार करता है और वही उसका स्वभाव बन जाता है।

❖ मानव जीवन में ही प्रभु-परमात्मा की पहचान जरूरी है। इसके एहसास में ही जीवन जीना सार्थक होता है।

❖ किसी भी गुरु, पीर-पैगम्बर ने नफरत करनी नहीं सिखाई। हर एक का संदेश यही था कि दिलों को प्यार से जोड़ें, नफरत में विचरण न करें।

❖ हमें ज्ञान पर चलते हुये सभी का आदर-सत्कार करना है और मूल मानवीय सिद्धांतों को धारण करना है जिससे हमारा जीवन भी सुखी होगा और हम दूसरों के सुख का कारण भी बन पाएंगे।

बाबा हरदेव सिंह जी के पावन वचन

- ❖ भक्त सेवा, सुमिरण, सत्संग करते हुए इस जीवन की यात्रा को तय करता है। वह अपना भी उद्धार करता है, औरों का भी कल्याण करता है।
- ❖ भक्तिरहित ज्ञान कभी मानसिक शान्ति नहीं देता।
- ❖ भक्त एक खिले फूल की भाँति होता है और भक्ति उसकी महक है।
- ❖ जब मन निर्मल हो गया तो जीवन भी निर्मल हो जायेगा।
- ❖ जो हरि के रंग में रंगे हुए हैं, उनमें ही पवित्रता है पावनता है।
- ❖ हमेशा विनम्रता, प्यार, करुणा और दया के भाव से युक्त रहना चाहिए।
- ❖ मन में यही शुकराने का भाव हमेशा बना रहे कि मालिक तेरी कृपा है जो तूने सब कुछ दिया है न दिया होता तो मैं आगे देने वाला कौन हूँ?
- ❖ जैसे गंगा में लीन हो चुका कोई भी जल, गंगाजल कहलाता है। इसी तरह जो हरि के समक्ष खुद को मिटा देता है, वह हरि रूप ही हो जाता है।
- ❖ असल महक और मन की निर्मलता, सुन्दर व्यवहार और नेक आचरण के साथ ही आ सकती है।
- ❖ मन की अवस्था ही इन्सान को भक्त या राक्षस बनाती है।
- ❖ प्रभु के साथ जुड़े भक्तों के जीवन में प्रेम की लहरें फूटती हैं।
- ❖ अभिमान की अपेक्षा विनम्रता से अधिक लाभ है।
- ❖ सोने की डली को अगर कीचड़ में फेंक दें तो उसका मूल्य कम नहीं होता अगर मिट्टी आसमान में उड़ जाये तो उसका मूल्य बढ़ नहीं जाता, उल्टे आँखों में पड़ती है।
- ❖ एक बोल संवारने वाले और एक बिगाड़ने वाले होते हैं लेकिन कर्म का स्थान बोलों से भी ऊँचा है।
- ❖ अहंकार अगर ऋषि-मुनियों को भी आ जाये तब भी वह पतन का ही कारण बनता है।
- ❖ हमेशा अच्छों का संग करें। पवन का संग पाकर पांव के नीचे रोंदी जा रही धूल भी आसमान को छू लेती है।
- ❖ अज्ञानता के अंधकार में रहकर तय किया गया जीवन सफर, धरती पर बोझ के समान है।
- ❖ घृणा-वैर, लोभ-लालच मन के रोग हैं। प्रेम, करुणा, दया आने पर ये रोग चले जाते हैं।
- ❖ हम केवल मानव का तन लिये ही न फिरें बल्कि मानवीय गुणों से युक्त भी हों।

बाल कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

समय पर उचित साहस

यह तब की बात है। जब फ्रांस का राजा लुई था। क्रान्तिकारी परिषद् के सामने उस पर मुकदमा चल रहा था, जो मात्र दिखावा और नाटक था। राजा के पूरे परिवार को मृत्यु-दण्ड् देने का निर्णय पहले ही निश्चित हो चुका था।

सारी स्थिति को अच्छी तरह जानते हुए भी राजपरिवार ने चल रहे मुकदमे में अपना बयान देना चाहा। यही नहीं, मुकदमे की पैरवी भी करने की दृढ़ता दिखायी। मगर कोई भी वकील राजा की ओर से वकालत करने के लिए तैयार नहीं हुआ। राजपरिवार की वकालत करने का सीधा अर्थ था– क्रांतिकारी परिषद् की नजर में चढ़ जाना एवं मृत्यु-दण्ड को न्यौता देना क्योंकि यह बिल्कुल साधारण-सी बात थी उस समय राजभक्त होने की आशंका मात्र से जान जाने का खतरा था।

ऐसे में काफी खोज के बाद राजघराने को अपने मुकदमे की वकालत करने के लिए एक वकील मिल ही गया। वह था– लौगार्ड।

खतरा मोल लेकर लौगार्ड ने रानी और बच्चे को निर्दोष सिद्ध करने में अपना पूरा जोर लगा दिया, किसी प्रकार की कमी नहीं रहने दी। मगर नतीजा वही निकला, जो पहले ही निश्चित हो चुका था अर्थात् राजघराने के सभी सदस्यों को मृत्यु-दण्ड।

लौगार्ड ने किसी लोभ-वश राजपरिवार की वकालत करने का खतरा मोल लिया था, ऐसी बात भी नहीं थी। वह अच्छी तरह जानता था कि राजकोष पहले ही जब्त कर लिया गया है।

फैसला जो भी हुआ, रानी को उसकी चिन्ता नहीं थी। हाँ, उसे इस बात का आत्मसंतोष जरूर था कि इस प्रतिकूल परिस्थिति में उसकी ओर से वकालत करने का किसी ने सही समय पर उचित साहस तो दिखाया। अब रानी के समक्ष वकील को फीस देने की समस्या उठ खड़ी हुई। रानी ने अपना बटुआ लौगार्ड के हाथ पर रखा।

सभी को उत्सुकता थी कि उसमें क्या है?

लौगार्ड ने सबके सामने बटुआ खोला, उसमें रानी के बालों की लट थी, साथ ही कृतज्ञता से भरे हुए आँसू।

उसे अच्छी तरह सहेज कर लौगार्ड ने रख लिया। उसे खुशी थी कि उसने उचित साहस दिखाकर अपने पेशे की पवित्रता की रक्षा कर ली। अब इसका नतीजा कल जो भी हो। ❖

बाल कहानी : हरजीत निषाद

सुन्दरवन में बसन्त उत्सव

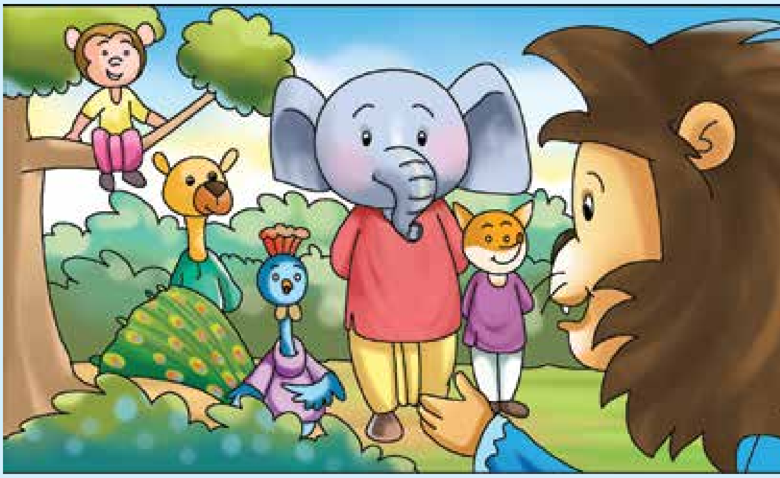

सुन्दरवन में बसन्त उत्सव मनाया जा रहा है। चारों ओर खुशी का माहौल है। बसन्त आते ही कड़ाके की ठंड पड़ना बन्द हो चुकी है। सुन्दरवन के बीच में बहने वाली नदी का पानी बिल्कुल साफ है, जो कल-कल करते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। नदी में नन्हीं मछलियों का झुण्ड सैर कर रहा है। दूसरी ओर बड़ी मछलियां तेज गति से इधर-उधर आ जा रही हैं। बसन्त आने से पहले ही वन में चारों ओर लाल, हरे, पीले, नीले फूल खिल रहे हैं। फूलों के आसपास तितलियां घूम रही हैं। कहीं भौरें फूलों पर मंडरा रहे हैं तो कहीं मधुमक्खियां। फूलों का रस लेकर अपने शहद के छत्तों तक आ-जा रही हैं।

बन्दरों का झुण्ड पेड़ों पर उछल-कूद मचा रहा है। कालू बन्दर शरीर में इन सबसे बड़ा नजर आ रहा है और वह बाकी बन्दरों पर अपना अधिकार जमाए हुए है। सुन्दरवन के दूसरी ओर मोर नाच रहे हैं। उनके पास ही हिरन घास चर रहे हैं। खरगोशों का समूह अपनी बिलों के आसपास घूम रहा है।

जंगल के राजा शेर सिंह ने बसन्तोत्सव मनाने के लिए सभी को घने पेड़ों के समीप वाले विशाल मैदान में बुलाया है। मैदान में सभी जानवरों व पक्षियों के बैठने के लिए अलग-अलग स्थान निर्धारित किये गये हैं। सारी व्यवस्थाएं विक्रम भालू की देख-रेख में की जा रही हैं। हाथियों को मैदान के बड़े-बड़े पेड़ों की लटकती हुई डालियों को साफ करके उत्सव के स्थल को सुन्दर बनाना है। जिराफ और ऊँट को कटींली झाड़ियों को साफ करना है। कौओं और तोतों को सभी को उत्सव की सूचना देने का काम सौंपा गया है। बंदरों को जंगल से फूल तोड़ कर लाना है और गिलहरियों को फूलों की माला बनाना है। सभी अपनी-अपनी जिम्मेदारी को लगन से पूरा करने में जुटे हुए हैं ताकि उत्सव की कोई भी व्यवस्था कमजोर न रहे। सुन्दरवन के निवासी सभी पशु-पक्षी अपने बसन्तोत्सव को अन्य जंगलों की तुलना में सबसे अच्छा बनाने के लिए खूब परिश्रम कर रहे हैं।

सूर्य अब बिल्कुल ऊपर सिर पर चमक रहा है। दोपहर होने को है और अब समारोह शुरू ही होने वाला है। जंगल के राजा शेर सिंह ने अपने सिंहासन पर बैठकर उत्सव शुरू करने की घोषणा कर दी है। कार्यक्रम मंत्री मोटू हाथी ने उत्सव की रूपरेखा बताई। इसके बाद सबसे पहले चम्पू मोर और उसकी टोली का नृत्य शुरू हो चुका है। मोरों ने पंख फैलाकर सुन्दर नृत्य दिखाया है जिसका उत्सव में उपस्थित गैंडों, हाथियों, बंदरों और भालुओं ने ताली बजाकर स्वागत किया है। इसके बाद शेरू बंदर और उसकी टोली का धूम-धड़ांम डांस शुरू हुआ है। इसके ठीक बाद मौका मिला है नीलांचल तालाब के बगुला, सारस और बत्तख के भांगडा डांस का। इनके सुन्दर डांस को सभी ने पसन्द किया है। इस सुन्दर डांस को देखकर ढेंचू गधे और उसके साथियों में भी नाचने का जोश आ गया और वो बिना बुलाए ही डांस मैदान में कूद पड़े हैं। ढेंचू गधे का नाच किसी को भी बिल्कुल अच्छा नहीं लगा और उसकी खूब हूटिंग हुई है। सभी ने कहा– इतना खराब डांस तो हमने कभी देखा ही नहीं था इसे तुरन्त बंद किया जाये।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे मोटू हाथी ने ढेंचू गधे के बिना बुलाए ही आ धमकने और कार्यक्रम को खराब करने पर नाराजगी दिखाई और उसे रेडकार्ड दिखाकर मैदान से बाहर कर दिया।

अब लम्बू ऊँट और टेंढू जिराफ ने अपनी टोली के साथ मिलकर एक सुन्दर झूमरू डांस पेश किया है और माहौल को खुशगवार बना दिया है। मोटू हाथी ने इसी के साथ बसन्त उत्सव कार्यक्रम को सम्पन्न घोषित कर दिया। उत्सव के अन्त में रानी मधुमक्खी द्वारा सबको स्वादिष्ट शहद वितरित किया गया और मंगल हाथी ने सभी को मीठे गन्ने बांटकर सबका मुँह मीठा कराया।

अन्त में जंगल के राजा शेर सिंह ने बसन्तोत्सव के बारे में बताया और खुशी के इस त्योहार की तरह ही नित्य सभी को प्यार मिलवर्तन और भाईचारे की भावना से मिलजुलकर रहने की प्रेरणा दी। शाम ढलने के साथ ही सभी धीरे-धीरे अपने घरों की ओर जाने लगे हैं।

❖

कविता : रामसेवक शर्मा

भरत समान बनो

नाम देश का भारत अपने,
बच्चो कैसे रखा सुनाएं।
कैसा वीर हुआ था बालक,
उसकी गौरव गाथा गाएं।।

एक गहन जंगल था भारी,
उसकी शोभा न्यारी-न्यारी।
नदियां बहतीं कलकल छलछल,
हरियाली थी प्यारी-प्यारी।।

बालक नाम भरत था जिसका,
वह वन में निर्भय रहता था।
मन चाहे जिस ओर खेलता,
मलय पवन जैसा बहता था।।

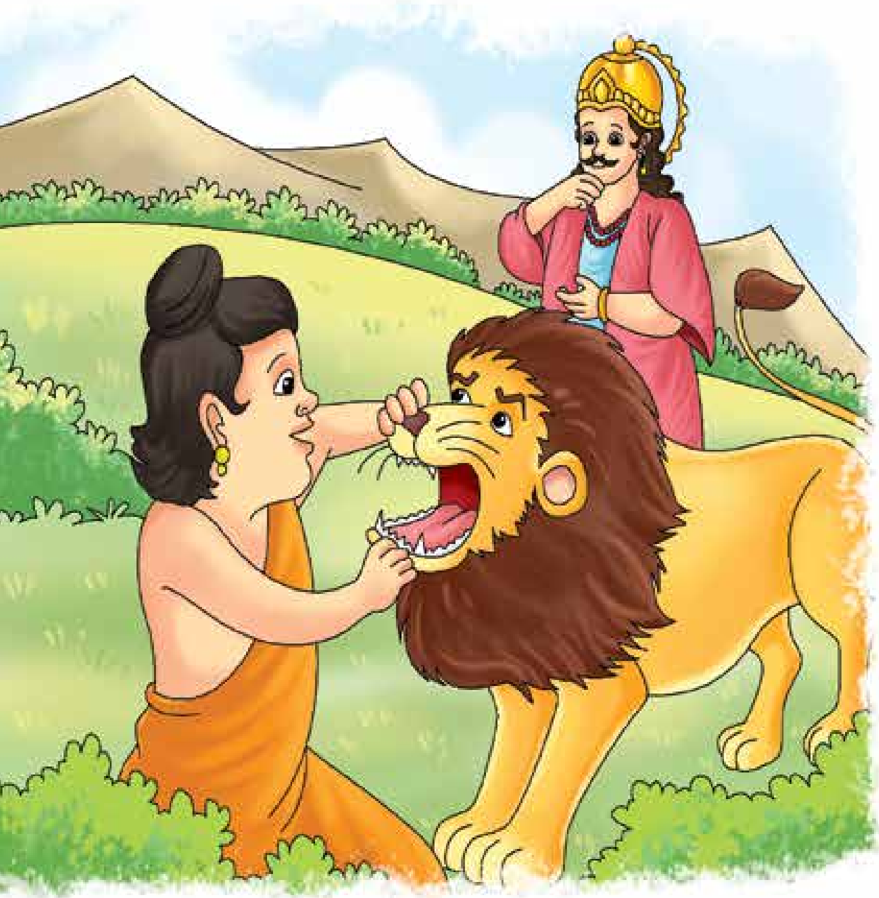

एक बार की बात कि बालक,
भरत खेल रहा था वन में।
कितने दांत शेर के होते,
गिनने की आई थी मन में।।

शेर बब्बर को पकड़ा उसने,
जबड़ा फाड़ा शेर हुआ नत।
नृप दुश्यंत तभी थे आए,
देख चकित बालक की हिम्मत।।

वीर भरत ऐसा बालक था,
नाम वही भारत कहलाया।
तुम भी भरत समान बनोगे,
इसीलिए तुमको समझाया।।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

सराय
व्यापारी ने रात शहर में ही एक सराय में गुजारने की सोची और वह एक सराय के दरवाजे पर जा पहुँचा।
व्यापारी सराय का दरवाजा खुलवाने के लिए वह जोर-जोर से दरवाजा खड़काने लगा।
बहुत देर बाद अन्दर से सराय के चौकीदार ने कहा- मुझे खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि दरवाजे की चाबी खो गई है। अब केवल चाँदी की चाबी से ही दरवाजा खुलेगा।

व्यापारी समझ गया कि चौकीदार क्या चाहता है। उसने दरवाजे के नीचे से चाँदी का एक सिक्का अन्दर पहुँचा दिया।
सिक्का पहुँचते ही दरवाजा खुल गया और व्यापारी अन्दर आ गया।
अन्दर आते ही व्यापारी ने चौकीदार से बाहर से खाना लाने को कहा और चौकीदार उनके लिए खाना लेने बाहर चला गया।
चौकीदार के बाहर जाते ही व्यापारी ने सराय का दरवाजा बन्द कर लिया।

चौकीदार खाना लेकर वापस आया और दरवाजा बन्द देख जोर-जोर से दरवाजा पीटने लगा।
तभी अन्दर से आवाज आई कि ये दरवाजा चाँदी की चाबी के बिना नहीं खुलेगा।
मजबूर होकर चौकीदार को वह चाँदी का सिक्का वापस लौटाना पड़ा।
तो बच्चों! 'जैसे को तैसा' कभी न कभी मिलता ही है। चाहे वह स्वाभाविक रूप में मिले या अस्वाभाविक रूप में।

जानकारीपूर्ण लेख : अंकुर श्रीश्रीमाल

घड़ियाल

घड़ियाल सरीसृप वर्ग का सबसे बड़ा जीव है। यह गोविएलिस वंश का मगरमच्छ का सम्बन्धी है परन्तु इसमें और मगरमच्छ में काफी अन्तर होता है। इसका थूथन मगरमच्छ की तरह छोटा न होकर काफी पतला और लम्बा रहता है। नर घड़ियाल के वयस्क होने पर इसके सिरे पर, थूथन के ऊपर एक गोल गेंद-सा भाग बन जाता है जिसे तंबी कहते हैं।

घड़ियाल सिर्फ भारत के उत्तरी इलाकों की बड़ी और उनकी सहायक नदियों में पाये जाते हैं। एक समय में यह दक्षिण पूर्व एशिया में बहुतायत से होते थे, भारत में भी इनके अंधाधुंध शिकार और परिस्थितियों के बदलाव के कारण एक बार इनकी जाति भारत से लुप्त होने पर ही आ गई थी। 1975 में भारत में केवल 100 के करीब घड़ियाल बचे रह गये थे। तब भारत और पाकिस्तान की सरकारों ने मिलकर इसे बचाए रखने के लिए इसके शिकार और निर्यात पर पाबंदी लगा दी। इस जीव की रक्षा के लिए उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश की सरकारों ने घड़ियाल अभयारण्य परियोजनाएं शुरू की। ओडिशा में नंदन कानन घड़ियाली संेचुरी बनाकर इसके अस्तित्व को बचाया गया।

सामान्यत: घड़ियाल की लम्बाई तीन मीटर से लेकर 4.5 मीटर की होती है पर कभी-कभी 6 मीटर लम्बे घड़ियाल भी पाये जाते हैं। इनके शरीर का ऊपरी भाग जैतूनी रंग का होता है जो उम्र के साथ-साथ गाढ़े रंग का होता जाता है। इसके नीचे का हिस्सा सफेद रहता है।

घड़ियाल की त्वचा बहुत कड़ी और मजबूत होती है जो देखने में चारखाने की तरह दिखलाई पड़ती है। इनके शरीर के ऊपर की चमड़ी करीब आधा सेंटीमीटर मोटी होती है जिसके नीचे हड्डियों की तह रहती है। पर इसके निचले हिस्से की चमड़ी मोटी और मजबूत होती है। यह काफी कीमती होती है। इसके सूटकेस, पर्स, जूते आदि बनते हैं।

घड़ियाल के लम्बे थूथन में हर तरफ की पंक्ति में 26 से 30 दाँत रहते हैं। ये दाँत लम्बे सुई जैसे तेज और तीखे होते हैं। किसी शिकार को पकड़कर घड़ियाल जब मुँह बन्द करता है तो ये दाँत उसके शरीर को बेध देते हैं फिर शिकार घड़ियाल के मुँह से निकल नहीं सकता।

घड़ियाल की आँखें उभरी हुई रहती हैं जिन पर एक प्रकार की पारदर्शी झिल्ली रहती है। पानी के भीतर जाने पर झिल्ली आँखों पर आ जाती है जिससे ये पानी में भी आसानी से देख सकते हैं।

इनकी अंगुलियां कुछ दूर तक आपस में जुड़ी रहती हैं और टांगों पर कुछ हिस्सा रीढ़-सा उठा हुआ रहता है। इनकी सूंघने और सुनने की शक्ति बहुत तेज होती है। दिन में ये अक्सर नदियों के किनारे धूप सेकते दिखाई दे जाते हैं। शाम को ये शिकार पर निकलते हैं। ये मगर की तरह हिंसक नहीं होते। ये मुनष्यों और जानवरों पर हमला नहीं करते पर जरूरत पड़ने पर ये अपनी दुम से घातक प्रहार कर सकते हैं। ये छोटे आकार की मछलियां, मेढक आदि खाते हैं। ❖

कविता : सुमेश निषाद

बसन्त ऋतु आई

वातावरण बना सुन्दर,
बसन्त ऋतु आई।
फूल खिले चंहु ओर,
हरियाली छाई।।

नए-नए पत्ते उगे,
बागों में बहार है।
खुशी लेकर आया,
बसन्त त्योहार है।।

झूम उठी प्रकृति,
पल्लवों का पालना।
फूलों सा वस्त्र पहने,
तितलियों का भागना।।

खुशियां मनाएं सभी,
खुशी हर ओर है।
मन्द-मन्द हवा बहे,
नाच रहे मोर हैं।

कविता : डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

आया बसन्त

मीलों तक सरसों पियराई।
आया बसन्त, मधु ऋतु आई।

आमों में बौर नया आया,
सारे उपवन को महकाया।
पेड़ों, मुंडेरों, खम्भों पर,
गूंजी पक्षियों की शहनाई।।

जाड़े का मौसम भाग चला,
सूरज दादा ने उसे छला।
अब बन्द हुआ कोहरा-पाला,
गुनगुनी धूप है इतराई।।

हम सबने बसन्ती कुरता,
पाजामा पीला सिलवाया।
बनकर बसन्त नाचे-कूदे,
हमको बसन्त ऋतु मन भायी।।

चीनी लोककथा : दिनेश 'दर्पण'

परियां और तालाब

बहुत पुरानी बात है। स्वर्ग की झील में पांच सुन्दर परियां रहती थीं। रोज-रोज एक जैसी दिनचर्या व क्रियाकलापों की जिन्दगी से ऊबकर कभी-कभी उनका मन पृथ्वी पर आने को करता था। पर उनकी परीरानी का उन पर नियंत्रण था। इसलिए वे चाहकर भी धरती पर नहीं आ सकती थीं।

एक दिन जब उनकी रानी गहरी नींद में सो रही थी, तभी पांचों परियों ने पांच कमल के रूप में अपना रूप बदल दिया और झील से निकलकर बाहर आ गईं। फिर वे सफेद बादलों के साथ उड़ते हुए पृथ्वी पर नीचे आ गईं। धरती पर पहुँचकर पांचों परियां एक-दूसरे के हाथों में हाथ डालकर नाचने लगीं। प्रत्येक की छवि अपने आप में निराली थी।

परियों ने पहली बार पृथ्वी पर अपने कदम रखे थे। इसलिए उन्हें यहाँ का नज़ारा काफी लुभावना लग रहा था। उन्हें यहाँ की हर चीज बड़ी प्यारी लग रही थी। वे घूम-घूमकर धरती के दृश्यों का आनन्द ले रही थी। तभी स्वर्ग से सुनहरी घण्टी बजी। इस घण्टी का तात्पर्य था कि स्वर्ग का द्वार बन्द होने वाला था। घण्टी की आवाज सुनते ही जाने की इच्छा न होने पर भी, विवश होकर पांचों परियां उड़कर वापस स्वर्गलोक में चली गईं।

इसके बाद तो अक्सर ही वे कमल का रूप धारण करके पृथ्वी पर आने लगीं। कभी-कभी वे पांच खिलती कुमुदिनी के फूल का रूप भी धारण कर लेतीं। इस प्रकार उनका रोज का ही सिलसिला हो गया। एक बार पृथ्वी पर लम्बे समय तक वर्षा नहीं हुई। पृथ्वी के सारे जीव-जन्तु परेशान हो उठे। पृथ्वी की ऐसी हालत देखकर पांचों परियां बड़ी

दुखी हुई। उन्होंने आपस में तय किया कि वे अपनी झील से एक-एक कलश जादुई जल को चुराकर पृथ्वी पर ले आयेंगी और पृथ्वीवासियों के जीवन की रक्षा करेंगी।

एक सुबह पांचों परियां बादलों के संग पांच सुनहरे कलश में जादुई जल लेकर पृथ्वी की ओर चल पड़ीं। तभी एक भयंकर गर्जना हुई। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा। उनके पीछे-पीछे झील की रानी अपने सैनिकों के साथ उन्हें पकड़ने आ रही थीं। यह देखकर परियां डर गईं। उन्होंने जल्दी से कमल के रूप में स्वयं को बदल डाला और कमल की बड़ी-बड़ी पत्तियों के बीच जाकर छिप गईं।

रानी ने उन्हें ऐसा करते देख लिया। वे जोर से चीखीं-चिल्लाईं तो परियों के बदले रूप कमल के फूल में से बाहर आ गये। रानी ने अपने सैनिकों को आदेश दिया– ले चलो इन्हें पकड़कर और इन्हें स्वर्ग के कैदखाने में ले जाकर डाल दो।

पांचों परियां रानी के सामने बार-बार गिड़गिड़ाने लगीं कि हमें पृथ्वी पर ही हमेशा के लिए रहने की अनुमति दे दीजिये। रानी ने उनकी बात मानने से इंकार कर दिया। उसने सैनिकों से कहा– इनसे सुनहरे कलश व जादुई जल जब्त कर लो।

पर इससे पहले कि सैनिक सुनहरे कलश जो जादुई जल से भरे थे। उन्हें जब्त करते, पांचों परियां दौड़कर भागीं। सैनिक भी उनके पीछे भागे। पर यह क्या ...? पांचों परियों ने जादुई जल से भरे उन कलशों को पृथ्वी पर फेंक

दिया। जैसे ही पांचों कलशों का जल पृथ्वी पर गिरा तत्काल वहाँ पांच स्वच्छ व मीठे जल वाले तालाब बन गये और कलश टूट-फूट गये।

यह सब देखकर रानी आग-बबूला हो गई। उसने गुस्से में शाप दिया– ''जाओ, तुम सब पृथ्वी पर ही तालाब बन जाओ। अब तुम लोगों के लिए स्वर्ग में कोई जगह नहीं है।'' अगले ही क्षण, पांचों परियां पांच तालाब के रूप में बदल गई और पृथ्वी पर आ गई। पांचों तालाब में कमल के फूल खिल गये। तब से लेकर आज तक पांचों परियां पांच तालाब के रूप में पृथ्वी पर आज तक विराजमान हैं और पृथ्वीवासियों के अच्छे जीवन के लिए लगातार कार्य कर रही हैं।

❖

प्रस्तुति : संजीव कुमार

पानी में छिपे भयंकर शैतान

मौसम शांत और सुहावना था। धूप महासागर पर सीधी पसरकर फैल गयी थी। ऐसे मौसम में कैप्टन मोर हाउस अपनी मोटर लांज में खड़े दूरबीन के सहारे दूर-दूर तक निहार रहे थे। एकाएक उनकी दूरबीन में काले बिंदु उभरे और वे देखते-देखते एक जहाज की शक्ल में बदल गये। अटलांटिक महासागर के जल को मथता हुआ यह जहाज जिस वेग के साथ आ रहा था उससे लगता था कि जहाज कैप्टन के नियंत्रण में नहीं है। यह देखकर कैप्टन मोर हाउस चौंक पड़े। वे एक खोज पार्टी लेकर जहाज के पास पहुँचे और रस्सों के सहारे अंदर कूद गये। इस जहाज के ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था– 'मेरी सिलेस्ट।' सारा जहाज निर्जन वन-सा झांय-झांय कर रहा था। जहाज के सारे यंत्र ठीक तरह से काम कर रहे थे पर चालक दल का कहीं पता न था। जहाज की सारी वस्तुएं दुरुस्त तथा सही स्थान पर थीं। जहाज में खाद्य पदार्थ एवं पीने का पानी प्रचुर मात्रा में मौजूद था। रजिस्टर पर जहाज के बंदरगाह से चलने की तारीख 24 नवंबर 1872 दर्ज थी। जहाज के डेक के ऊपर किसी विशाल जन्तु के दाँतों या शरीर के किसी अंगों द्वारा हमला किये जाने के निशान उपस्थित थे। वहीं पर खून से रंगी एक छोटी-सी तलवार भी मिली। डेक पर किसी समुद्री जन्तु एवं मनुष्य के बीच द्वन्द्व हुआ था। जहाज के इस डरावने एवं लोमहर्षक दृश्य

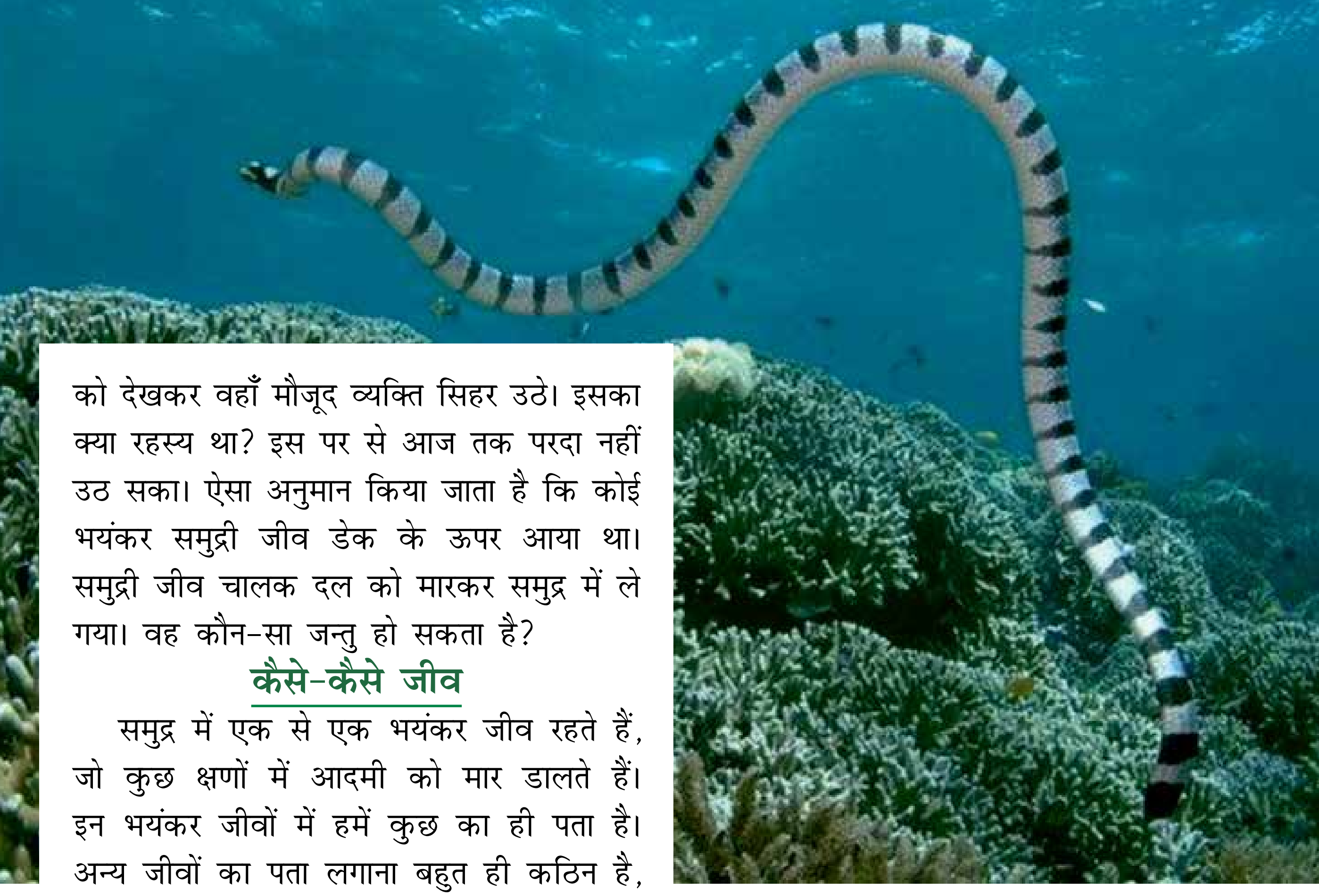

को देखकर वहाँ मौजूद व्यक्ति सिहर उठे। इसका क्या रहस्य था? इस पर से आज तक परदा नहीं उठ सका। ऐसा अनुमान किया जाता है कि कोई भयंकर समुद्री जीव डेक के ऊपर आया था। समुद्री जीव चालक दल को मारकर समुद्र में ले गया। वह कौन-सा जन्तु हो सकता है?

कैसे-कैसे जीव

समुद्र में एक से एक भयंकर जीव रहते हैं, जो कुछ क्षणों में आदमी को मार डालते हैं। इन भयंकर जीवों में हमें कुछ का ही पता है। अन्य जीवों का पता लगाना बहुत ही कठिन है, क्योंकि वे इतनी गहराई में पाये जाते हैं कि वहाँ तक किसी आदमी का पहुँच पाना संभव नहीं है। यहाँ उन कतिपय जीवों का उल्लेख है जिनके बारे में हमें पता है। इन भयंकर जीवों में एक है 'ओरफिश', जिसे समुद्री सांप भी कहते हैं। इसकी लंबाई लगभग 30 फुट होती है। 'ओरफिश' का शरीर देखकर लगता है कि यह किसी जेली जैसी चिपचिपी चीज से बना है। प्रायः इसका रंग हल्का नीला तथा गहरी धारियां लिये होता है। इसके पंख लम्बे-लम्बे चप्पुओं जैसे होते हैं। शायद इसलिए इसका नाम 'ओरफिश' पड़ गया। 'ओरफिश' ज्यादातर समुद्र के ऊपर ही तैरती है।

दूसरी तरह की एक और मछली है जिसका मुँह बहुत चौड़ा होता है। इसकी ऊपर की पर्त बहुत पतली होती है। इसके शरीर के कई अंगों से चमक निकलती है। 'ऑक्टोपस' और 'स्किवड' बड़े मुलायम जीव हैं। 'ऑक्टोपस' बिना रीढ़ वाले सबसे बड़े जीवों में गिना जाता है। 'ऑक्टोपस' और 'स्किवड' की संवेदन शक्ति बड़ी तीव्र होती है। इनके तैरने का तरीका भी विचित्र होता है। इनके अंदर एक ट्यूब होती है जिसके द्वारा ये पानी खींचते हैं और बड़ी तेजी से बाहर निकालते हैं। इस क्रिया के परिणामस्वरूप इनके शरीर में गति पैदा होती है और ये आगे बढ़ते चले जाते हैं। कोई-कोई 'स्किवड' तो 90 फुट तक लम्बे होते हैं ये दोनों जीव बड़े भंयकर होते हैं। इनकी दस भुजाएं होती हैं जिनमें से दो भुजाएं बड़ी आसानी से चलती है। ये दो भुजाएं शिकार को पकड़ती हैं और अन्य आठ भुजाएं उसे मुँह तक ले जाती हैं। इनके जबड़े बड़े और दाँत सींग जैसे होते हैं जिनसे ये कठोर वस्तु को भी बड़ी आसानी से चबा जाते हैं।

क्रूर जन्तुओं का संसार

समुद्र की गहराइयों में कुछ ऐसे भंयकर जन्तु पाए जाते हैं जिनकी क्रूरता के बारे में कल्पना करना भी कठिन है। इनमें से एक है 'क्लैम' जो आदमी के लिए बड़ा घातक है। यह डरावना और विशालकाय जीव है। इसकी चौड़ाई चार फुट और वजन लगभग एक टन होता है। 'क्लैम' का सारा वजन उसके बाहरी खोल में होता है। यही खोल वास्तव में खतरनाक है। 'क्लैम' अपना निचला हिस्सा सदा ऊपर की ओर रखता है ताकि शिकार खोल में फंस सके।

एक मछली और है 'एंगलर'। यह अधिक ताकतवर नहीं होती परन्तु बेहद चालाक होती है। जिस प्रकार कांटा डालकर आदमी मछलियां पकड़ने की घात में बैठता है, उसी तरह 'एंगलर' मछलियां भी दूसरी मछलियों का शिकार करने के लिए चौकन्ना बैठी रहती हैं। 'एंगलर' के सिर के ऊपर बल्व के समान प्रकाशमय कोई चीज होती है जो समुद्र की गहराईयों में उसे रास्ता दिखाने में मदद करती है।

'एंगलर' मछलियों की और जाति है– 'फ्रागफिश'। इनकी यह विशेषता है कि ये अपना रंग बदलती रहती हैं। कुछ इनमें पीले रंग की होती हैं जो अपना रंग बदलकर ईटों जैसी लाल भी हो जाती हैं। इनके मुँह में शिकार को पकड़ने के लिए कांटा लगा रहता है। 'एंगलर' की एक और जाति भी है जिसे 'चमगादड़' जाति कहते हैं। इनके पास शिकार पकड़ने का कांटा होता है, पर वह कांटा मुँह के अंदर ऊपरी हिस्से के एक ट्यूब में छिपा रहता है। शिकार पकड़ते समय ये उसे बाहर निकाल लेती हैं। 'एंगलर' मछली गहरे एवं छिछले दोनों तरह के पानी में मिलती है पर बल्व उन्हीं के सिर पर होता है जो गहरे समुद्र में होती है।

❖

संग्रहकर्ता : संग्रहकर्ता : विद्या प्रकाश

- ❖ हाथी की सूंड में एक भी हड्डी नहीं होती। सूंड में केवल मांसपेशियां होती हैं।
- ❖ कोबरा सांप के एक ग्राम जहर से 150 व्यक्तियों की मौत हो सकती है।
- ❖ केंचुआ अपने वजन से दस गुना अधिक वजन खींच सकता है।
- ❖ अफ्रीका में पाया जाने वाला मैड्रक एक ऐसा पौधा है जिसकी शक्ल मुनष्य से मिलती-जुलती है और उसे उखाड़ने पर बच्चे के रोने की आवाज आती है।
- ❖ जिराफ बोल नहीं पाता क्योंकि वह जन्मजात गूंगा होता है।
- ❖ मच्छर अपने वजन से तीन गुणा अधिक खून पी सकता हैं
- ❖ फ्रांस की जलवायु ऐसी है कि वहाँ मच्छर पैदा नहीं हो सकते।
- ❖ केले के पेड़ में लकड़ी नहीं होती तथा तने में चिकनी रेशेदार जलयुक्त परत पाई जाती है।
- ❖ सबसे बड़ी खाड़ी मेक्सिको की खाड़ी है।
- ❖ सबसे तेज बढ़ने वाला पौधा बांस है।
- ❖ विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट है।

प्रस्तुति : राम अवध राम (गुरैनी)

पहेलियां

1. भारत में एक ऐसा धाम,
देश-विदेश में उसका नाम।
कालिंदी तट पर स्थित,
प्यार का देता है पैगाम।।

2. तीन शब्दों के समानार्थ से,
बना एक गाँव का नाम।
प्रथम देवता दूजा परी,
शब्द तीसरा ग्राम।।

3. घोड़ा क्यों अड़ा पान क्यों सड़ा?
रोटी क्यों जली?
तीनों का जवाब एक है,
बूझो मेरी पहेली।

4. एक घर में चालीस चोर,
खोला दरवाजा निकले चोर।
मुँह काले और टाँग सफेद,
बच्चो बताओ इसका भेद।।

5. एक लड़के से किसी ने पूछा,
बच्चे क्या है नाम तुम्हारा?
बच्चे ने कहा जिससे गाड़ी चले, रूके,
वही है नाम हमारा।

6. श्याम वर्ण की गुच्छों वाली,
डाल न कोई इससे खाली।
बच्चो नाम बताओ उसका,
है गुणों से भरपूर निराली।।

7. एक अधेड़ संग में अपने,
एक दुल्हन लिए जा रहा था।
राह में कुछ लोग व्यंग में पूछे,
दुल्हन का क्या है आपसे रिश्ता?
दुल्हन बोली मेरी सासु, इनकी सासु,
दोनों सगी माँ-बेटी।
तुम्हीं बताओ मैं रिश्ते में,
इनकी क्या हूँ लगती?

8. जल से भरा है घड़ा नहीं,
पेड़ पर बसे पंछी नहीं।
मेरी पहेली का उत्तर,
बच्चो बताओ सही सही।।

9. एक पौधा हमने यहाँ देखा,
एक पौधा देखा कोलकाता।
एक पौधा हमने ऐसा देखा,
जिसके फल के ऊपर पत्ता।।

10. कहाँ गोल गुम्बद स्थित है?
बच्चो हमें बताओ।
आज पहेली बस इतनी,
अब अपने घर जाओ।।

पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।

प्रेरक कहानी : शिवनारायण सिंह

परिश्रम करने वाले को ही मिलता है फल

जैसे-जैसे परीक्षाओं के दिन करीब आते जा रहे थे, राजू की परेशानी बढ़ती जा रही थी। उसने पूरे वर्षभर पढ़ाई-लिखाई नहीं की थी। पाठ्यपुस्तकों को कभी हाथ तक न लगाया था। कक्षा में टीचर की बातों पर कभी ध्यान देने की उसने जरूरत न समझी थी। घर पर भी वह किसी का कहना नहीं मानता था। स्कूल से घर आते ही वह खेलने के लिए बाहर निकल जाता और काफी देर बाद घर लौटता। सुबह भी वह देर से उठकर जल्दी-जल्दी नहा-धोकर किसी तरह तैयार होकर स्कूल के लिए चल देता।

उसकी कुछ समझ में न रहा था कि इतने थोड़े से समय में वह परीक्षा से कैसे निपटे। तभी उसे सामने वाली पहाड़ी का ध्यान आया। गाँव की पहाड़ी पर सरस्वती देवी का मन्दिर था। उसने सोचा- चलकर विद्या की देवी को मनाया जाये। देवी-देवता तो प्रार्थना से प्रसन्न हो जाते हैं और मनोकामना पूरी करते हैं।

वह अब रोज सुबह गाँव की पहाड़ी पर देवी के मन्दिर जा पहुँचता। वहाँ जाकर वह घंटे बजाता। सरस्वती की मूर्ति को फूलमाला पहनाता, धूप-दीप जलाता और देवी के आगे खड़ा होकर खूब प्रार्थना करता। उसे विश्वास हो गया था कि सरस्वती देवी प्रसन्न होकर परीक्षा में उसकी सहायता अवश्य करेगी। वह परीक्षा में उत्तीर्ण अवश्य हो जायेगा। उसकी प्रार्थना और पूजा अर्चना व्यर्थ न जायेगी।

परीक्षाएं आरम्भ हो चुकी थीं। राजू का एक भी पर्चा ठीक न जा रहा था। वह किसी भी प्रश्न का ठीक से उत्तर लिख न पाया था। फिर भी उसे देवी पर विश्वास था। वह सोच रहा था कि कोई चमत्कार अवश्य हो जायेगा। पर उसका ऐसा सोचना ठीक न निकला। परीक्षा परिणाम घोषित किये गये। उसकी कक्षा के काफी छात्र उत्तीर्ण हो गये थे। कुछ ही छात्र अनुत्तीर्ण हुए थे जिनमें वह भी था। उसने अपना माथा पीट लिया। वह बोला- भला यह कैसे हो गया? उसने तो विद्या की देवी सरस्वती की इतनी अधिक आराधना की थी। उसकी आराधना निष्फल कैसे हो गई?

वह आज शाम को नित्य की तरह गाँव की पहाड़ी पर जाकर देवी के मन्दिर में जा पहुँचा। उसने क्रोध में भरकर बोला- आप कैसी देवी

हैं? आपने मेरी प्रार्थना नहीं सुनी। मैंने आपकी इतनी आराधना की पर मेरी आराधना निष्फल हो गई। आप कैसे विद्या की देवी कहलाती हैं?

वह थके मन से मन्दिर से घर लौट गया। बहुत ही बेमन से थोड़ा-सा भोजन कर वह पलंग पर जा लेटा। उसे आज नींद न आ रही थी। नींद आने पर उसने सपना देखा। सपने में उससे सरस्वती देवी बोली– नादान बालक! तूने मुझ पर नाहक क्रोध किया है। मैं विद्या की सरस्वती देवी हूँ। मैं सच्चे अर्थों में उन किताबों में रहती हूँ जिनको तूने कभी हाथ तक नहीं लगाया है। मैं अध्ययनशील लोगों के दिलों में रहती हूँ। तूने परीक्षा में पास होने के लिए बड़ा सरल मार्ग अपनाना चाहा। तूने बार-बार मेरे मन्दिर में आकर अपना वक्त बर्बाद किया। तुमने बगैर परिश्रम किये मेरी प्रसन्नता पानी चाही पर मैं सिर्फ उन लोगों की सहायता करती हूँ जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। पढ़ाई-लिखाई छोड़कर जो लोग परिश्रम से बचना चाहते हैं वे देवी-देवताओं के पीछे पड़े रहते हैं। याद रखो, फल परिश्रम करने वाले को ही मिलता है।

राजू की नींद खुल गई। उसने खिड़की से बाहर देखा। आसमान पर सूरज की पहली किरण फूट रही थी।

वह बोला– अब से मैं मन लगाकर पढ़ा करूंगा और परीक्षा में उत्तीर्ण होकर रहूंगा।

❖

कविता : मंजु दवे

हरी सब्जियां

चलो सब हरी सब्जियां खाएं।
इनको खायें सेहत बनाएं।

सरसों, पालक, बथुआ, मेथी,
चेहरे को ये रंगत देती।
मिनरल्स का हैं ये भंडार।
इनको खाओ बारम्बार।।

खून की मात्रा खूब बढ़ाएं,
रोग प्रतिरोधक क्षमता लाएं।
जो तन मन में रंगत लाएं,
चलो सब हरी सब्जियां खाएं।।

इनमें खूब विटामिन होते,
जो शरीर को स्फूर्ति देते।
भोजन को संतुलित बनाएं।
चलो हरी सब्जियां खाएं।।

इनकी खुशबू प्यारी-प्यारी,
खूब बढ़ाएं रंगत-न्यारी।
मित्रों को भी खूब बताएं,
चलो हरी सब्जियां खाएं।।

चलो सब हरी सब्जियां खाएं।
इनको खायें सेहत बनाएं।

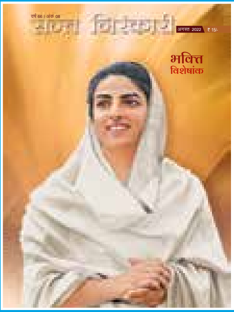

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी । पंजाबी । अंग्रेजी । मराठी । नेपाली । गुजराती । बांग्ला । तमिल । तेलुगू । कन्नड । ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

बाल कविता : राजेश पुरोहित

लो आया बसन्त

मौसम बदला जाड़ा भागा,
लो अब आया बसन्त।
डाल-डाल और पात-पात,
सजा-धजा आया बसन्त।।

पीली ओढ़नी सरसों पहनें,
आम बेर पर छाया बसन्त।
फल-फूलों से पेड़ लदा,
मौसम भाया यह बसन्त।।

ढेरों अमरूद सबने खाया,
भौरा लेकर आया बसन्त।
कोयल ने गीत गाया,
खुशियां ले आया बसन्त।।

नई महक लेकर आया,
नव उमंग संग आया बसन्त।
तितली ने नाच दिखाया,
फूलों ने महकाया बसन्त।।

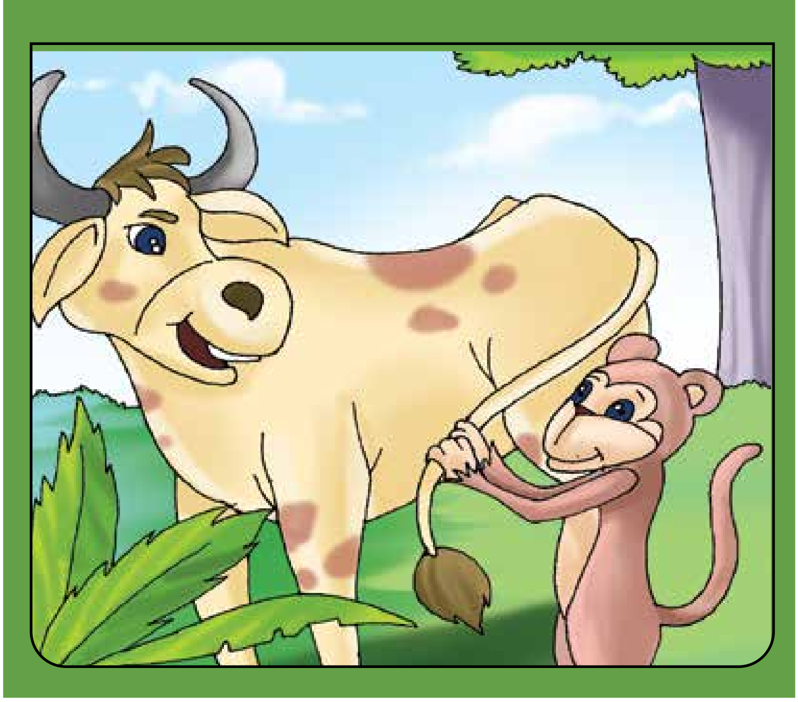

बाल कथा : राजेन्द्र निशेश

सुबह का भूला

गोलू बन्दर बहुत ही चंचल स्वभाव का था। नित नई शरारतें करना और जंगल के दूसरे जानवरों और पक्षियों को सताना उसकी आदत का एक अंग बन गया था। दूसरों को सताने के नये-नये तरीके वह सोचता रहता। कभी बोलू खरहा को छिपकर कंकड़ मार देता और खीं-खीं करके हँसने लगता और कभी नीलू भैंस की दुम के साथ लटक जाता। कभी वह शेरू कुत्ते की पीठ पर अचानक सवार हो जाता जिससे वह एकदम घबरा जाता। इस प्रकार वह प्रत्येक जानवर को तंग करने के ढंग अपना लेता। सभी जानवर उसे गंदा गोलू कहकर पुकारते लेकिन इससे वह और चिढ़ जाता और दूसरी शरारतें सोचने लगता।

आमों का मौसम आने पर गोलू, भोलू रीछ के बगीचे से आम चुराकर खा जाता। इतना ही नहीं खाने से अधिक आम के पेड़ों को अधिक नुकसान पहुँचाता। इसी प्रकार प्रत्येक फल के मौसम में वह चोरी करके फल खाता और टहनियों और पत्तों को तोड़-तोड़कर नीचे फेंकता। चीजों को तहस-नहस करने में अपनी हेकड़ी समझता। मौका मिलने पर पेड़ों में बनाये गये अन्य पक्षियों के घोंसलों को भी अपना निशाना बनाता और उनके अंडो को तोड़ देता अथवा नष्ट कर देता। सभी पशु-पक्षी उसकी नित नई शरारतों से बेहद दु:खी थे। वे उसे समझाते, लेकिन गोलू के कान पर जूं तक न रेंगती।

एक बार तो उसने हद ही कर दी। अपने शरारती मित्रों के साथ मिलकर रात के अंधेरे में एक गड्ढा खोदना शुरू कर दिया। कई दिनों में जब काफी गड्ढा बन गया तो उसने उसके ऊपर घास डालकर उसे छिपा दिया ताकि उसमें कोई जानवर गिर जाये और वह तालियां बजाकर मजे ले सके। लेकिन भगवान की मर्जी ऐसी हुई कि कई दिनों तक उस तरफ किसी जानवर का आना-जाना नहीं हुआ। अब

उसे भी ध्यान नहीं रहा कि उसने गड्ढा कहाँ पर खोदा था? एक दिन वह अपनी ही धुन में जा रहा था और चलते-चलते उसी गड्ढे में जा गिरा और उसकी टांग पर गहरा जख्म हो गया। वह दर्द से चीखने-चिल्लाने लगा। जब दूसरे जानवरों को पता चला तो वे बोले– जैसी करनी, वैसी भरनी।

लेकिन शेरखान उसे सुधारना चाहते थे। उन्होंने दूसरे जानवरों से कहा– 'भाइयों, गोलू बन्दर में अभी बचपना है, इसलिए उसका मन शरारतों में लगा रहता है। लेकिन अगर उसे सुधारने का मौका दिया जाये तो निश्चित ही वह सुधार सकता है। अगर सुबह का भूला शाम को घर आ जाये तो उसे भूला नहीं समझना चाहिए।'

शेरखान की बात मानकर छैलू लोमड़ और उसके साथियों ने उसे बाहर निकाला और मीकू खरगोश से उसकी मरहम-पट्टी करवाई। वह हाल में डॉक्टरी पढ़कर लौटा था। उसे हल्दी मिला दूध भी पीने को दिया गया।

गोलू ने सुन रखा था कि जैसे को तैसा दण्ड मिलता है, लेकिन अन्य जानवरों के व्यवहार ने उसकी आँखें खोल दी। अब उसने मन ही मन किसी जीव को कभी न सताने की शपथ ले ली। ❖

अपना
सामान्य ज्ञान बढ़ाओ

स्थापत्य कला किसे कहते हैं?

इमारतों के निर्माण की विधि को स्थापत्य कला कहते हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सभी की अपनी-अपनी स्थापत्य शैली रही है। स्थापत्य शैली स्थानीय प्राकृतिक परिस्थितियों, उपलब्ध सामग्री और आवश्यकता पर निर्भर करती है। हड़प्पा सभ्यता में इमारतें ईंटों से निर्मित थीं। जबकि बाद में मंदिरों एवं मस्जिदों में मुख्यत: पत्थरों का ही प्रयोग हुआ था। भारतीय मंदिरों में स्थापत्य शैली मुख्यत: दो शैलियों में बंटी हुई है। द्रविड़ शैली और नागर शैली।

इन्द्रधनुषी क्रांति क्या है?

नई राष्ट्रीय कृषि नीति में दुग्ध (श्वेत क्रांति) मतस्य उत्पादन (नीली क्रांति) तिलहन उत्पादन (पीली क्रांति) और खाद्यान्न उत्पादन (हरित क्रांति) सभी को समग्र रूप में विकसित करने की रणनीति अपनाई गई है। जिसे इन्द्रधनुषी क्रांति कहते हैं।

विली विली क्या है?

विली विली उत्तरी पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली उष्णकटिबन्धीय चक्रवात है। जिसका समय एवं मार्ग प्राय: अनिश्चित होता है। ऑस्ट्रेलिया के मरुस्थलों में चलने वाली भंवर युक्त पवन भी विली विली कहलाती है।

अंतरिक्ष और आकाश में क्या अन्तर है?

आकाश पूरे ब्रह्मांड का सूचक है जिसमें हमारी पृथ्वी भी सम्मिलित है जबकि अंतरिक्ष का अर्थ है पृथ्वी को छोड़कर शेष सभी स्थान है।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा

जानकारीपूर्ण लेख : परशुराम शुक्ल

एक विलुप्तप्राय जीव

लाल पांडा

पांडा प्रोसायोनिडाई परिवार का स्तनपायी जीव है। पांडा पूर्वी हिमालय में नेपाल से लेकर हिमाचल प्रदेश के समशीतोष्ण वनों तक, दक्षिणी-पश्चिमी चीन के सछ्वान प्रान्त के बांस के जंगलों में एवं तिब्बत-सिक्किम और बर्मा के कुछ भागों में पाया जाता है। पांडा अपना निवास बर्फ से ढके अत्यन्त दुर्गम स्थानों में बनाता है। अतः इसके सम्बन्ध में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। यह एक अद्भुत प्राणी है। इसकी कुछ विशेषताएं भालू से मिलती हैं और कुछ रैकून से। उदाहरण के लिए इसका रक्त सीरम भालू के समान होता है, किन्तु गुणसूत्र रैकून की तरह होते हैं। यह अपने पिछले पैरों के पूरे तलवे जमीन पर रखकर भालू की तरह चलता है और भालू की तरह गुर्राने की आवाज निकालता है, किन्तु रैकून और बिल्ली की तरह फूत्कार भी करता है। पांडा की इन्हीं विशेषताओं के कारण एक लम्बे समय तक जीव वैज्ञानिक यह निश्चित नहीं कर सके कि इसे भालू परिवार का माना जाये या रैकून परिवार का।

जीव वैज्ञानिकों के अनुसार हमारी धरती पर लगभग 4 करोड़ वर्ष पूर्व 'मियासिस' नामक एक मांसाहारी जीव पाया जाता था, जो देखने में कुत्ते के समान था। आगे चलकर इसकी दो प्रजातियाँ विकसित हुईं। पहली प्रजाति का जीव भालू से मिलता-जुलता था और दूसरी प्रजाति का जीव जंगली कुत्ते से। दूसरी प्रजाति से ही वर्तमान जंगली कुत्ता, लोमड़ी, भेड़िया, लकड़बग्घा आदि विकसित हुए। पहली प्रजाति के भालू जैसे जीव से लगभग दो करोड़ वर्ष पूर्व प्राचीन रैकून की उत्पत्ति हुई थी। वर्तमान रैकून और पांडा इसी के वंशज हैं।

पांडा की दो प्रजातियाँ पायी जाती हैं– भीमकाय पांडा और लाल पांडा। दोनों के आकार और आदतों में बहुत अन्तर होता है। भीमकाय पांडा की शारीरिक सरंचना और बहुत से गुण भालू के समान होते हैं, जबकि लाल पांडा रैकून की तरह होता है।

सर्वप्रथम लाल पांडा की खोज 1821 में हार्डविक नामक एक पर्यटक ने की थी। इसके बाद 1925 में प्रख्यात जीव वैज्ञानिक फ्रेडरिक क्यूरियर ने इसका विस्तृत विवरण प्रकाशित किया। लाल पांडा भीमकाय पांडा से अधिक विस्तृत क्षेत्र में पाया जाता है। यह हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों– नेपाल, सिक्किम, बर्मा और दक्षिणी चीन के कुछ भागों में 2300 से लेकर 4000 मीटर तक की ऊँचाई वाले बाँस के वनों वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। भीमकाय पांडा के समान ही लाल पांडा भी ऐसे दुर्गम स्थानों में रहता है, जो वर्षभर बर्फ अथवा कोहरे से ढके रहते हैं। यही कारण है कि अभी तक इसका पूरी तरह वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जा सका है।

लाल पांडा बहुत छोटा होता है। इसकी लम्बाई 60 सेंटीमीटर से लेकर 110 सेंटीमीटर तक होती है। इसमें लगभग आधी लम्बाई पूँछ की होती है। लाल पांडा अधिक भारी नहीं होता। इसका वजन 3 से 5 किलोग्राम के मध्य होता है। लाल पांडा के शरीर पर चमकदार हल्का पीलापन लिए हुए लाल रंग का घना, कोमल

समूर होता है। इसकी पूँछ लम्बी, मोटी और रोयेंदार होती है एवं इस पर काले व लाल रंग के छल्ले होते हैं। इसकी पूँछ का अन्तिम भाग निश्चित रूप से काला होता है। लाल पांडा का मुँह सफेद होता है और दोनों आँखों के नीचे समूर के रंग की एक पट्टी होती है, जो नीचे जाकर गले से मिल जाती है। इसके कान

नुकीले होते हैं और आँखों व मुँह के चारों ओर सफेद रंग का घेरा होता है। लाल पांडा के सिर और शरीर के नीचे का भाग काला होता है। इसके अगले और पिछले पैर भालू की तरह छोटे होते हैं और पंजों में तेज व नुकीले नाखूनों वाली पाँच-पाँच उंगलियाँ होती हैं। इसके नाखून पूरी तरह मुड़ नहीं पाते। लाल पांडा के चारों पैर बालदार समूर से ढके होते हैं तथा इसके अगले पैर की बनावट इस प्रकार की होती है कि इनकी सहायता से यह बर्फीली चट्टानों को सरलता से पकड़ सकता है और वृक्षों पर तेजी से बढ़ सकता है।

लाल पांडा निशाचर है अर्थात् यह सूर्यास्त के बाद भोजन की तलाश में निकलता है। यह दिन के समय वृक्षों के कोटरों अथवा शाखाओं पर आराम करता है।

लाल पांडा का प्रमुख भोजन बांस की कोपलें, मुलायम पत्तियां, कन्दमूल तथा सदाबहार रसीली झाड़ियाँ हैं। इनके साथ ही यह अण्डे तथा छोटे-छोटे जीव भी खाता है। बांस इसका प्रिय भोजन है। यह दोनों हाथों से बांस की पत्तियाँ तथा कोपलें तोड़ता है और उन्हें चूसकर खाता है। यह कभी भी बांस के जंगलों से दूर नहीं जाता। लाल पांडा के दाँतों को देखने में यह स्पष्ट हो जाता है कि इसके पूर्वज मांसाहारी थे, किन्तु अब इसके दाँतों की संरचना में काफी परिवर्तन हो गया है और ये इस प्रकार के हो गये कि यह विभिन्न प्रकार के कंदमूल, वनस्पति तथा बांस की पत्तियां आदि चूसकर सरलता से खा सकता है। पांडा के खाने का ढंग ऐसा होता है कि शीघ्र ही इसका पेट नहीं भर पाता। अतः इसे कम से कम 12 घण्टे भोजन करना पड़ता है। यह गोधूलि के समय भोजन की तलाश में निकलता है और अगले दिन प्रातः वापस लौटता है। लाल पांडा वर्षभर सक्रिय रहता है। यह जमीन पर दौड़ते हुए कभी नहीं देखा गया किन्तु वृक्षों पर इसकी तेजी देखने योग्य होती है। पांडा कुत्तों से बहुत डरता है। इसे जैसे ही अपने आस-पास कुत्तों के होने का एहसास होता है वह भागकर वृक्ष पर चढ़ जाता है। यह वृक्षों की पतली से पतली शाखाओं पर भी चढ़ जाता है और

सरलता से फुनगी तक पहुँच सकता है एवं नीचे मुँह करके उतरता है।

लाल पांडा एकान्त में विचरण करने वाला बर्फीले पर्वतीय वनों का जीव है। मादा पांडा वृक्षों के कटोरों अथवा चट्टानों की दरारों में एक से चार तक बच्चों को जन्म देती है। इसके बच्चे जन्म के समय अंधे और अपाहिज होते हैं। इनकी यह स्थिति लगभग एक माह तक बनी रहती है। इस मध्य मादा इन्हें अपने मुँह में दबाकर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचाती है। 8-10 महीनों में बच्चे आत्मनिर्भर हो जाते हैं, किन्तु मादा तब तक गर्भधारण नहीं करती जब तक बच्चे उसके साथ रहते हैं। बच्चों के पालन-पोषण में नर की कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं होती। यह कार्य अकेली मादा करती है। लाल पांडा का यदि शिकार न किया जाए तो यह 13 से 15 वर्ष तक जीवित रहता है।

लाल पांडा एशिया के एक अत्यन्त छोटे और सीमित क्षेत्र में पाया जाता है। इसका बहुत अधिक शिकार नहीं किया गया, किन्तु चिड़ियाघरों में रखने के लिए इसे बड़ी संख्या में पकड़ा गया तथा दूर-दराज के देशों में भेजा गया। इससे अधिकांश पांडा मर गये और जो बचे वे अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहे। कुछ जीव वैज्ञानिकों का मत है कि पांडा की संख्या तेजी से होने वाली कमी का प्रमुख कारण पृथ्वी पर होने वाले मौसम सम्बन्धी परिवर्तन है। वास्तविकता जो भी हो, वर्तमान में पांडा एक विलुप्त प्राय दुर्लभ जीव है। विश्व में ये कम संख्या में बचे हैं। इसे बचाने के लिए संरक्षण की आवश्यकता है। ❖

इतिहास कथा : अर्चना जैन

सौ घुड़सवारों की टुकड़ी

एक बार गुप्तचर सैनिक ने आकर महमूद गजनवी के कान में एक राज की बात कही...।

यह अनोखी बात सुनकर गजनवी को बहुत अचरज हुआ। वह मन में सोचने लगा– सौ घुड़सवार सैनिकों का यह दल भला हमारी एक लाख विशाल सेना का मुकाबला कैसे कर सकेगा?

हाँ, गजनवी को रह-रहकर पड़ोसी राजा की सैनिक टुकड़ी के बूढ़े सरदार की अक्ल पर तरस आ रहा था जो निरर्थक ही उसकी विशाल सेना से टकराने का दुःसाहस कर रहा था...।

महमूद गजनवी ने अपना दूत भिजवाकर उन योद्धाओं का आशय पूछवाया। दूत द्वारा प्राप्त स्पष्टीकरण सुनकर महमूद गजनवी सचमुच उनकी वीरता एवं कर्तव्यनिष्ठा से अभिभूत हो गया।

बूढ़े राजपूत सरदार ने जवाब भिजवाया था– हम जानते हैं कि संख्या और साधनों में बहुत अन्तर है तथा इसका परिणाम क्या होगा यह भी हमसे छिपा हुआ नहीं है, मगर तुम्हारा बादशाह सोमनाथ मन्दिर लूटने वाला लुटेरा है, आक्रांता है, अनीति और अन्याय को सहना तथा सहते हुए जीवित रहना अत्यन्त दुष्कर है। सर्वोत्तम है उसका प्रतिकार करते हुए समाप्त हो जाना...।

सचमुच घुड़सवारों की वह टुकड़ी जान हथेली पर लेकर गजनवी की विशाल सेना पर टूट पड़ी। हजारों सैनिकों को मूली-गाजर की भाँति काटते हुए वे स्वयं वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी वीरता एवं कर्तव्यनिष्ठा देखकर महमूद गजनवी वाह-वाह कर उठा तथा सिर झुकाकर उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। ❖

प्रेरक-प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

घाटी और पहाड़

एक घाटी थी। पास ही एक पहाड़ भी था। किसी दिन पहाड़ घमण्ड से बोल उठा, ''मैं कितना ऊँचा हूँ। यही से मुझे दूर-दूर तक दिखाई देता है।''

''और ऊँचा हो।'' घाटी ने कहा, ''तुम्हें ऊँचा उठता देखकर मुझे खूब खुशी होती है।''

''झूठ।'' पहाड़ को घाटी की बात पर जरा भी यकीन नहीं हुआ। वह उपेक्षा और तिरस्कार के स्वर में बोला, ''सच तो यह है कि तुम मुझे ऊँचा उठते देखकर ईर्ष्या से जलती हो। तुम नीचे और अंधेरे में रहने वाली भला मुझे क्या समझ पाओगी?''

घाटी इस पर कुछ नहीं बोली। चुप रही। मगर उधर से गुजर रहे एक मानव ने दोनों की बातचीत अच्छी तरह सुन ली थी। वह मुस्कुरा पड़ा।

मानव का मुस्कुराना कुछ ऐसा था कि पहाड़ को खूब अखरा। जरा भी अच्छा नहीं लगा। वह पूछ बैठा, ''हमारी बातचीत पर तुम क्यों मुस्कुराए?''

''तुम्हारी कृतघ्नता पर।'' मानव ने दो टूक जवाब दिया।

''मतलब?'' पहाड़ को मानव की बात एकदम समझ में नहीं आयी।

''अरे मूर्ख, घाटी तो तुम्हारी माँ है जिसने अपना सब कुछ देकर तुम्हें ऊँचा उठने का भरपूर अवसर दिया है।'' मानव ने आगे कहा, ''और हर माँ अपने पुत्र की उन्नति देखकर खुश होती है; बेहद खुश! मगर तू आज अपनी माँ के सारे त्याग को भुलाकर उसकी उपेक्षा कर रहा है। उसे तिरस्कार की नजरों से देखता है। यह क्या है? तुम्हारी कृतघ्नता ही न! याद रख, घाटी के बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व ही नहीं है।''

पहाड़ को अपनी भूल अब अच्छी तरह समझ में आ गई। उसका घमण्ड जाता रहा। सिर झुक गया। घाटी के लिए उसके हृदय में सच्ची श्रद्धा उत्पन्न हो गयी।

घाटी गद्‌गद्‌ हो उठी। पहाड़ में बदलाव देखकर मानव फिर मुस्कुराया। मगर इस बार मानव का मुस्कुराना पहाड़ को जरा भी नहीं अखरा। बल्कि खूब भाया।

मानव अपनी राह चल दिया।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : प्रियंका

रात का समय
रात के खाने में मम्मी ने आलू की सब्ज़ी, दाल और रोटी बनाई।
किट्टी जिद्द नहीं करते, चुपचाप खा लो।
मम्मी मुझे ये खाना नहीं खाना। मुझे तो बर्गर खाना है और कोल्ड-ड्रिंक पीनी है।
किट्टी ने मम्मी की नज़र से बचाकर खाने को पास में रखे फूलदान में डाल दिया।
अगले दिन
किट्टी तुम दूध पियो, मैं अभी आती हूँ।
नहीं, नहीं! मुझे दूध नहीं पसंद।

मम्मी के जाते ही किट्टी दूध से भरे गिलास को खिड़की से बाहर फेंक देती है।
मम्मी, मैं अब स्कूल जा रही हूँ, बॉय।
सुबह सफ़ाई करते समय मम्मी को फूलदान में रात का खाना दिखाई दिया। मम्मी समझ गई कि ये किट्टी ने ही किया है।

शाम का समय
किट्टी आओ हम एक पौधा लगाते हैं।
हाँ मम्मी! मैं भी आपकी मदद करूँगी
मम्मी पौधे में कोल्ड-ड्रिंक डालने लगी।
मम्मी, आप ये क्या कर रहे हो, कोल्ड-ड्रिंक से तो ये पौधा खराब हो जाएगा। इसमें पानी डालो।
लेकिन किट्टी तुम भी तो बहुत कोल्ड-ड्रिंक पीती हो, बर्गर पिज़्ज़ा खाती हो। अगर कोल्ड-ड्रिंक से पौधा खराब हो सकता है तो इससे तुम्हारी तबीयत भी तो खराब हो सकती है।
मैं समझ गई मम्मी! अब से मैं सिर्फ़ घर का ही खाना खाया करूँगी।

संग्रहकर्ता : राम अवध राम (गुरैनी)

कभी न भूलो

❖ सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है।

– सुभाषचन्द्र बोस

❖ सत्यपरायण मनुष्य किसी से घृणा नहीं करता।

– महात्मा बुद्ध

❖ जीवन में सफलता उसी को मिलती है जो बाल्यावस्था में अच्छे नियमों का पालन करते हैं। – महात्मा गाँधी

❖ हँसने और प्रसन्न रहने में कुछ प्रयास की आवश्यकता है। अपने को प्रसन्न रखना भी एक कला है। – लॉर्ड वैबरी

❖ जीवित रहने के लिए खाओ न कि खाते रहने के लिए जीवित रहो। – फ्रेंकलिन

❖ अक्लमंद व्यक्ति बोलने से पहले सोचता है, बेवकूफ बोल लेता है। वह बाद में सोचता है कि वह क्या बोल गया। – रसकिन

❖ ज्ञान जब इतना घमण्डी बन जाए कि रो न सके, इतना गंभीर बन जाए कि हँस न सके, इतना आत्मकेन्द्रित हो जाए कि अपने सिवाय किसी और की चिन्ता न करे तो वह ज्ञान अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक है।

– खलील जिब्रान

❖ जैसा इन्सान आपको बनना है वैसा बनने की इच्छाशक्ति, लगन और हौसला ही सफलता की पहली सीढ़ी हे। – जॉर्ज शीन

❖ धैर्य, क्षमा, करुणा, दया, कोमल वाणी, अद्वेष और शुचिता ये सात सुख के साधन हैं।

– महाभारत

❖ एक श्रेष्ठ व्यक्ति कथनी में कम करनी में ज्यादा होता है। – कन्फ्यूशियस

❖ यदि आप सौ व्यक्तियों की सहायता नहीं कर सकते तो एक ही व्यक्ति की सहायता कर दो। – मदर टेरेसा

❖ वृक्ष अपने सिर पर सूर्य की प्रचण्ड धूप सहता है किन्तु अपने आश्रितों की गर्मी अपनी छाया द्वारा दूर करता है। – कालीदास

❖ अच्छे गुण सदैव मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करते हैं। – जॉनसन

❖ टाल-मटोल करने वाला व्यक्ति सदा दुर्भाग्य से भिड़ा रहता है। – टिसियड

❖ जो समय का मूल्य नहीं समझता, समय उसको मूल्यहीन बना देता है।

– विपुल तिलक नारायण

❖ प्रतिभा जाति पर निर्भर नहीं है जो परिश्रमी है वही प्राप्त करता है।

– शाह अब्दुल लतीफ

❖ जिसके पास उम्मीद है, वह हारकर भी नहीं हारता। – अज्ञात

बाल कविता : रामचरण 'आजाद'

हम कलियां भारत उपवन की

हम कलियां भारत उपवन की,
गुल बनकर मुस्कायेंगे।
धरती पर फैली बदबू को,
खुशबू से महकायेंगे।।

नहीं डरेंगे तूफानों से,
आंधी में लहरायेंगे।
जो भटक रहे अज्ञान तम में,
उनको राह दिखायेंगे।।

युगों-युगों से जो शोषित हैं,
शोषण-मुक्त करायेंगे।
छिने हुए अधिकार दिलाकर,
नया सवेरा लायेंगे।।

मातृभूमि के हम रखवाले,
रक्षा हेतु मिट जायेंगे।
घुसपैठी हो या हमलावर,
सबको सबक सिखायेंगे।।

सहिष्णुता का पाठ पढ़ाकर,
भातृभाव फैलायेंगे।
दानवता को दूर भगाकर,
मानवता अपनायेंगे।।

कविता : सत्य नारायण

तो कहलायेंगे महान

माने सभी बड़ों का कहना,
और करें उनका सम्मान।
केवल अपना स्वार्थ न साधे,
परोपकार का रखे ध्यान।।

बांटे दर्द दीन दु:खियों का,
बिखरे चेहरों पर मुस्कान।
नहीं सतायें कभी किसी को,
अनपढ़ को दे विद्यादान।।

कड़ुवा बच्चों, कभी न बोलें,
पहले सोचें फिर मुँह खोलें।
बिना काम के व्यर्थ न डोलें,
कर्मवीर के पीछे हो लें।।

गुमराहों को राह दिखायें,
करें न नेकी का अभिमान।
सत्य अहिंसा को अपनायें,
तो कहलायेंगे महान।।

गुरुभक्त उपमन्यु

प्राचीनकाल में महर्षि आयोद धौम्य नाम के एक सम्मानित गुरु थे। उनके शिष्य का नाम था 'उपमन्यु'। उपमन्यु अत्यन्त प्रतिभावान व शरीर से हृष्ट-पुष्ट बालक था। वह ऋषि के आश्रम की गायें चराने व रखवाली का कार्य करता था। उस समय का यह नियम था कि बालक को आश्रम में रहते हुए गुरु सेवा करनी होती थी। वह नगर व ग्राम से भिक्षा लेकर गुरु को देता तब गुरु उसमें से जो भी दे दे, वह खाकर सन्तुष्ट रहना होता था।

बालक उपमन्यु भी आश्रम की आचार संहिता का पालन करता था लेकिन वह जो भी भिक्षा माँगकर लाता, वह धौम्य ऋषि अपने पास रख लेते। उपमन्यु को उसमें से कुछ भी खाने को न देते थे। बेचारा उपमन्यु कुछ कहता भी नहीं था।

एक दिन धौम्य ऋषि ने उपमन्यु से पूछा, ''मैं तुम्हारे द्वारा लायी भिक्षा का सम्पूर्ण भाग रख लेता हूँ। ऐसी स्थिति में तुम क्या खाते हो? तुम्हारा शरीर तो हृष्ट-पुष्ट दिखाई देता है।''

उपमन्यु बोला, ''गुरुदेव! मैं दुबारा भिक्षा माँगकर अपना काम चला लेता हूँ।''

''यह काम तो तुम अच्छा नहीं करते। इससे नगर के गृहस्थों को भी संकोच होता है, फिर दूसरे भिक्षार्थियों के जीविकाहरण का पाप होता है।'' ऋषि ने कहा।

उपमन्यु ने यह बात स्वीकार कर ली कि वे दुबारा ऐसा पाप नहीं करेंगे। कुछ दिन बीतने के बाद एक दिन गुरु जी ने उपमन्यु से फिर पूछा, ''आजकल तुम क्या भोजन ले रहे हो?''

उपमन्यु ने कहा, ''भगवन्! मैं गाय का दूध जंगल में चराते समय पी लेता हूँ।''

अब तो धौम्य जी गुस्सा हो गए। उन्होंने कहा, ''आश्रम की सभी गायें मेरी हैं, मेरी आज्ञा के बिना इनका दुग्धपान करना पाप है।''

उपमन्यु ने दूध पीना भी बन्द कर दिया। कुछ दिन पश्चात् जब एक बार फिर ऋषि की भेंट उपमन्यु से हुई तो उपमन्यु ने बताया कि ''वे बछड़ों के मुख से गिरा फेन (झाग) पी लेते हैं।''

गुरुदेव ने कहा, ''ऐसी भूल अब आगे से न करना। बछड़े दयालु होते हैं। वे तुम्हारे लिए अधिक फेन (झाग) गिरा देते होंगे और स्वयं भूखे रह जाते होंगे।''

अब उपमन्यु के भोजन के सभी रास्ते बन्द हो गये। गायों के पीछे दिनभर जंगल में दौड़ना और कुछ भी नहीं खाने से वह तड़पने लगा। एक दिन उसने 'आक' के पत्ते खा लिए। उन विषैले पत्तों की गर्मी से उसकी आँखों की रोशनी चली गई। वे अन्धे हो गए। दिखाई न पड़ने के कारण जंगल में घूमते समय एक जलहीन कुएं में गिर गये।

सूर्यास्त के समय बिना चरवाहे के गायें आश्रम को लौट आई परन्तु उपमन्यु नहीं लौटे। गुरुदेव चिन्तित हो उठे– ''मैंने उपमन्यु का भोजन बन्द कर दिया। इसी से वह शायद कहीं नाराज

होकर चला गया?'' शिष्यों के साथ उसी समय वे जंगल की ओर चल दिये और पुकारने लगे, ''बेटा उपमन्यु! तुम कहाँ हो?''

उपमन्यु का स्वर सुनाई दिया, ''गुरु जी! मैं यहाँ हूँ। इस कुएं में पड़ा हूँ।''

ऋषि कुएं के पास गये। उपमन्यु ने उनके पूछने पर कुएं में गिरने का कारण बता दिया। तब गुरुदेव ने उपमन्यु से देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमारों की प्रार्थना करने का आदेश दिया। गुरु की आज्ञा से उपमन्यु ने अश्विनीकुमारों की प्रार्थना की। एक भक्त बालक प्रार्थना करे और देवता प्रसन्न न हों, ऐसा कैसे हो सकता है।

अश्विनीकुमार कुएं में ही प्रकट हो गए और उपमन्यु से कहा, ''बेटा! हम तुम्हारी प्रार्थना सुनकर यहाँ आए हैं। यह मीठापुआ खा लो।''

उपमन्यु बोला, ''प्रभु! बिना गुरुदेव को अर्पण किए मैं यह पुआ नहीं खा सकता।''

''अश्विनीकुमारों ने कहा, ''तुम्हारे गुरु ने पहले ही हमारी प्रार्थना कर ली थी और हमारा दिया हुआ पुआ अपने गुरु को अर्पण किये बिना खा लिया था। अतएव तुम भी ऐसा ही करो।''

''उपमन्यु बोला, ''गुरुजनों की गलती शिष्यों को नहीं देखनी चाहिए। कृपया आप लोग हमको क्षमा कर दें, गुरुदेव को अर्पित किये बिना मैं कुछ भी नहीं खा सकता।''

अश्विनीकुमारों ने कहा, ''तुम एक अच्छे गुरु के शिष्य हो। तुम्हारे गुरु के दाँत लोहे के हैं और अब तुम्हारे दाँत सोने के हो जायेंगे अर्थात् तुम अपने गुरु से अधिक प्रसिद्धि पाओगे। तुम्हारी आँखों में पहले की तरह रोशनी भी आ जाएगी।''

अश्विनीकुमारों ने उपमन्यु को कुएं से बाहर निकाला। तब उस शिष्य को गुरु आयोद धौम्य ने गले से लगा लिया और कहा, ''मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। तुम सफल हुए। मैं तुम्हें सम्पूर्ण ज्ञान-शास्त्र का अध्ययन कराऊँगा और तुम्हें श्रेष्ठ ऋषि बनाऊँगा।''

बाद में उपमन्यु तत्वज्ञानी ऋषि के रूप में सुविख्यात हुए। ❖

जानकारी : किरण बाला

समुद्री गाय

धरती पर विचरण करती गायें तो आपने देखी हैं, लेकिन शायद आप नहीं जानते कि समुद्र में भी गायें होती हैं। जिन्हें समुद्री गाय कहा जाता है। समुद्र में रहने वाला यह जीव बड़ा विचित्र है। धरती की गायों से इसका कुछ लेना-देना नहीं है। आकार में बड़ी ये गायें रफ्तार में बड़ी धीमी होती हैं।

समुद्री गायों की कमर के ऊपर के अंग नहीं होते और इसकी जगह क्षेत्रिय समतल पूंछ होती है। आगे के अंग फिलपर जैसे होते हैं। त्वचा चिकनी, बालविहीन होती है। वैसे इनकी चार किस्में होती हैं। पहले वर्ग में डुगोंग आती है तथा शेष तीन वर्ग में मैनाटीज आती हैं। किस्म के आधार पर इनके आकार में थोड़ी भिन्नता होती है जैसे डुगोंग की पूंछ दानेदार होती है। जबकि मैनाटी की गोल और पैडलनुमा। जहाँ तक डुगोंग किस्म की समुद्री गाय का प्रश्न है, वह हिन्द महासागर से लेकर ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी किनारों तक मिल सकती है जबकि मैनाटी की तीनों किस्में उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका तथा पश्चिम अफ्रीका में पाई जाती हैं।

डुगोंग किस्म की समुद्री गाय की लम्बाई आठ से नौ फुट तक हो सकती है जबकि मैनाटी की लम्बाई 15 फुट देखी गई है। मैनाटी सुमद्री गाय का चेहरा आदमी से मिलता है और पूंछ मछली जैसी होती है। लोग इन्हें देख जलपरियों की कल्पना करने लगते हैं।

समुद्री गाय का मुख्य भोजन समुद्री घास है। दोनों ही प्रजाति की समुद्री गाय के चरने के तरीके भिन्न होते हैं। ये एक दिन में 50 किलोग्राम तक घास खा लेती हैं। इनके दाँत गिरते रहते हैं और उनके स्थान पर नये दाँत उग आते हैं। ❖

संग्रहकर्ता : नारायणकुमार 'रोशन'

यह भी जानिये

- केन्द्रीय आलू अनुसंधान शिमला में स्थित है।
- नेशनल डेयरी रिसर्च संस्थान करनाल में स्थित है।
- केन्द्रीय वन अनुसंधान संस्थान देहरादून में स्थित है।
- केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में स्थित है।
- केन्द्रीय औषधि संस्थान लखनऊ में स्थित है।
- केन्द्रीय खनन अनुसंधान संस्थान धनबाद में स्थित है।
- केन्द्रीय ईंधन अनुसंधान संस्थान जलगोडा में स्थित है।
- भारतीय खगोल विज्ञान संस्थान बेंगलुरु में स्थित है।
- भारतीय रबड़ शोध संस्थान कोट्टयम में स्थित है।

आलेख : जयेन्द्र

पक्षियों का दृष्टि ज्ञान

तुम्हें जानकर अचरज होगा कि पक्षी भी तरह-तरह के रंगों को आसानी से पहचान लेते हैं। यूं जो पक्षी जिस रंग का होता है, उसे वो ही रंग अच्छा लगता है। जैसे तोता हरा होता है। यह अक्सर हरी चीजों की ओर ज्यादा आकर्षित होता है। घने हरे पेड़ों पर बैठता है, हरी मिर्च खाता है, कच्चे फल जो पूर्णतया हरे होते हैं उन्हें बड़े चाव से खाना पसंद करता है। इसी तरह कौआ काले रंग की चीजों को देखकर मस्ती से कांव-कांव करने लगता है। मोर की गर्दन नीली होती है। यह नीले-नीले मेघों को देखकर प्रसन्नता जाहिर करता है, खैर ...

प्रकृति ने पक्षियों में रंग विभेदन क्षमता का अद्‌भुत ज्ञान दिया है। ये दूर तथा निकट की वस्तुएं बहुत कम समय के अन्तर से स्पष्ट देख लेते हैं। वैसे इनके मस्तिष्क में दृष्टि सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने वाला हिस्सा काफी उन्नत रहता है। इनकी एक आँख दूसरी से स्वतंत्र रहती है तथा हर आँख का देखने का क्षेत्र अलग-अलग रहता है। इसलिए इन्हें 'एक नेत्रक' या 'एकाक्ष दृष्टि' कहते हैं, किन्तु ये सिर के सामने की वस्तु का केवल कुछ ही हिस्सा देख पाते हैं।

सामान्यत: पक्षियों में कुछ मात्रा में 'एक नेत्रक' व कुछ मात्रा में 'द्विनेत्रक' दृष्टि रहती है। वे पक्षी जो दिन में शिकार करते हैं, उनकी आंखें सिर के दोनों तरफ रहती हैं, जबकि रात में शिकार करने वाले पक्षियों की आँखें एकदम सामने रहती हैं।

उल्लू अकेला वह पक्षी है, जो मनुष्य की तरह पलक झपका सकता है। यह भी मनुष्य की तरह दोनों आँखों से एक साथ देखने वाला पक्षी है। इसकी आँखों के लैंस गहरे सींग जैसी नली के अन्दर रहते हैं।

जीवधारियों में बाज व गिद्ध की आँखें सबसे ज्यादा तेज रहती हैं। बाज व गिद्ध को 10 किलोमीटर की दूरी की चीज साफ दिखाई देती है।

चमगादड़ की आँखें तो काफी बड़ी होती हैं, परन्तु लैंसों में लचीलापन बिल्कुल नहीं रहता इसलिए चमगादड़ केवल दिन या रात का ही पता लगा पाते हैं।

शिकारी पक्षियों की आँखें मनुष्य से 11 गुना तेज होती हैं क्योंकि इनके रेटिना में प्रति वर्ग मिलीमीटर में 15 लाख दृष्टि सम्बन्धी जीवकोश रहते हैं जबकि मनुष्य की आँख में केवल 2 लाख ही जीवकोश रहते हैं। ❖

पढ़ो और हँसो

एक आदमी : (आम वाले से) क्या ये लंगड़े आम हैं?

आमवाला : जी हाँ, लंगड़े ही हैं। लंगड़े नहीं होते तो मैं इन्हें सिर पर उठाकर क्यों घूमता?

भिखारी : (राहगीर से) साहब! पाँच रुपया दे दो। दो दिनों से खाना नहीं खाया।

राहगीर : पहले यह बता कि पाँच रुपये में खाना मिलता कहाँ है? दोनों मिलकर खाएंगे।

पिता : (पुत्र से) बेटे, तुम्हारे स्कूल में प्रतियोगिता होने वाली है। तुम उसमें जरूर भाग लेना।

बेटा : ठीक है पिताजी, जैसे ही प्रतियोगिता शुरू होगी मैं भाग लूंगा।

पार्थ : (दीदी से) दीदी तुम रस के साथ मलाई क्यों खा रही हो?

दीदी : क्योंकि मेरा रसमलाई खाने का दिल कर रहा था।

मरीज : (नर्स से) क्या डॉक्टर साहब ने अभी तक नींद की गोलियां नहीं भेजी?

नर्स : जी नहीं।

मरीज : जल्दी मंगवाओ, मुझे नींद आ रही है। अब मैं गोलियों के इंतजार में और नहीं जाग सकता।

माँ : (रोहित से) उठ जा आलसी, सूरज कब का निकल आया है।

रोहित : तो क्या हुआ माँ, वो सोता भी मुझसे पहले है।

अध्यापक : (पार्थ से) उम्मीदवार किसे कहते हैं?

पार्थ : सर, जिसके आने की उम्मीद बार-बार की जाए और जो फिर भी न आए उसे उम्मीदवार कहते हैं।

कण्डक्टर : (यात्री से) इतनी जगह पड़ी है आप बैठ क्यों नहीं जाते?

यात्री : मैं यहाँ बैठने नहीं आया हूँ, मुझे घर जल्दी पहुँचना है।

– गुरमीत सिंह (इन्दौर)

लवली : (मिंटू से) यह हरे रंग वाली बर्फी बहुत स्वादिष्ट है। कहाँ से लाए तुम?

मिंटू : यार साल भर पहले जब मैं इसे दिल्ली से लाया था तब तो इसका रंग सफेद था। अब पता नहीं हरा कैसे हो गया?

नदी में नहाने के लिए जाते हुए हाथी का पैर चींटियों पर पड़ गया। इससे दो-तीन चींटियां गुस्से में आकर उस हाथी पर चढ़ गईं तो रानी चींटी ने उन चींटियों से चिल्लाकर कहा– इस हाथी को डुबो-डुबोकर मारो, डुबो-डुबोकर।

एक मोटी औरत ने एक चोर को पकड़ा और उसके ऊपर बैठ गई। फिर अपने नौकर से बोली– जा, पुलिस को बुला ला।
नौकर बोला– मेरी चप्पल खो गई है।
चोर चिल्लाया– मेरी पहन ले, पर जल्दी जा।

नेता जी ने अपने भाषण के दौरान कहा– हमें अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करनी चाहिए।

इतना कहना था कि एक महिला भीड़ में से तुरन्त खड़ी हुई और चिल्लाकर बोली– मैं तो बहुत देर से कोशिश कर रही हूँ पर यह पुलिस वाला बार-बार बैठा देता है।

अध्यापक ने छात्र से पूछा– क्या तुम बता सकते हो कि दर्द-नाक का क्या मतलब होता है?

–सर, नाक का दर्द।– छात्र ने फौरन जवाब दिया।

एक पड़ोसी : (दूसरे पड़ोसी से) तीन बुलाओ और तेरह आ जाएं तो क्या किया जाए?

दूसरा पड़ोसी : फौरन 'नौ दो ग्यारह' हो जाने में ही भलाई है।

राजू ने अपनी माँ से शिकायत की– माँ चन्दू ने मेरी हॉकी तोड़ दी।

–लेकिन क्यों?– माँ ने नाराज होते हुए पूछा।

–क्योंकि मैंने उसकी टांग पर मार दी थी।– राजू ने जवाब दिया।

टिंकू दुखी था।?
मिंटू ने पूछा– क्यों टेंशन में हो?

टिंकू : यार, एक दोस्त को प्लास्टिक सर्जरी के लिए दो लाख दिये थे, अब उसे पहचान नहीं पा रहा हूँ।

– आकाश मेघानी (गोंदिया)

बाल कविता : गौरीशंकर वैश्य

मातृभाषा

मातृभाषा माँ की बोली,
सबकी प्यारी है दूधबोली।

माँ की भाषा में जब बोलें,
ज्यों कानों में मिश्री घोलें।

माँ की ममता, माँ का प्यार,
देता चिंतन का आधार।

ध्वनि है सरस मधुर संगीत,
सहज हृदय लेती है जीत।

मातृभाषा का प्रथम प्रयोग,
अन्य भाषाओं का भी उपयोग।

करें मातृभाषा संरक्षित,
कभी न समझें इसे उपेक्षित।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

निराली है माँ

कितनी प्यारी-प्यारी माँ,
मन की भोली-भाली माँ।
त्याग भरा है पूरा जीवन,
ममता की इक प्याली माँ।।

दिनभर इतना काम करे वो,
पलभर भी न खाली माँ।
घर की करती चिन्ता इतनी,
सबकी ही रखवाली माँ।।

सेवा सबकी करती रहती,
सेवा में बलिहारी है माँ।
दूजा न कोई माँ के जैसा,
ममता भरी निराली माँ।

गुरु वन्दना

सन्त निरंकारी आध्यात्मिक स्थल (समालखा) में हुए 75वें वार्षिक निरंकारी सन्त समागम के अवसर पर सतुगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की पावन छत्रछाया में भक्तिमय गुरु वन्दना प्रस्तुत करते हुए निरंकारी भक्त।

नवम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **यशिका पंजवाणी** 13 वर्ष
झूलेलाल सोसाइटी,
एफसीआई गोदाम के सामने,
गोधरा (गुजरात)

2. **दिव्यराज परमार** 13 वर्ष
पंचाल अस्पताल के पीछे,
भोईवाला, गोधरा (गुजरात)

3. **हार्दिक मूलचंदानी** 13 वर्ष
झूलेलाल सोसाइटी, लुनावाडा रोड,
एफसीआई गोदाम के सामने,
गोधरा (गुजरात)

4. **अभिश्री मकसाने** 10 वर्ष
'यशवासिन', ए-502, सेक्टर-27,
खारघर, नवीं मुम्बई (महाराष्ट्र)

5. **सौम्या भिरानी** 9 वर्ष
सन्त निरंकारी भवन के सामने,
गुरु नानक नगर, मुर्तिजापुर (महाराष्ट्र)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

आलिया प्रवीण (उरैन), सानवी खुराना (जवाहर नगर, श्रीगंगानगर), यशिका (कालका माता रोड, उदयपुर), हार्दिक गुप्ता (शास्त्री कालोनी, रायसिंह नगर), रिद्धि सैनी (राजनगर, नई दिल्ली), आरव मलूजा (जलालाबाद, फाजिल्का), किट्टी, यशिका देवजानी, तक्षिल पटेल, मुस्कान, सुमित रूपानी, अंशिका, दक्ष, धर्मेन्द्र, पुंजाली, मंथन पंजवानी, शिव, अनन्त बम्बानी, पीयूष, परी समियानी, लहर, चाँदनी मूलचंदानी, आरोही, यश भोजवानी (गोधरा)।

फरवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 15 मार्च तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **अप्रैल अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

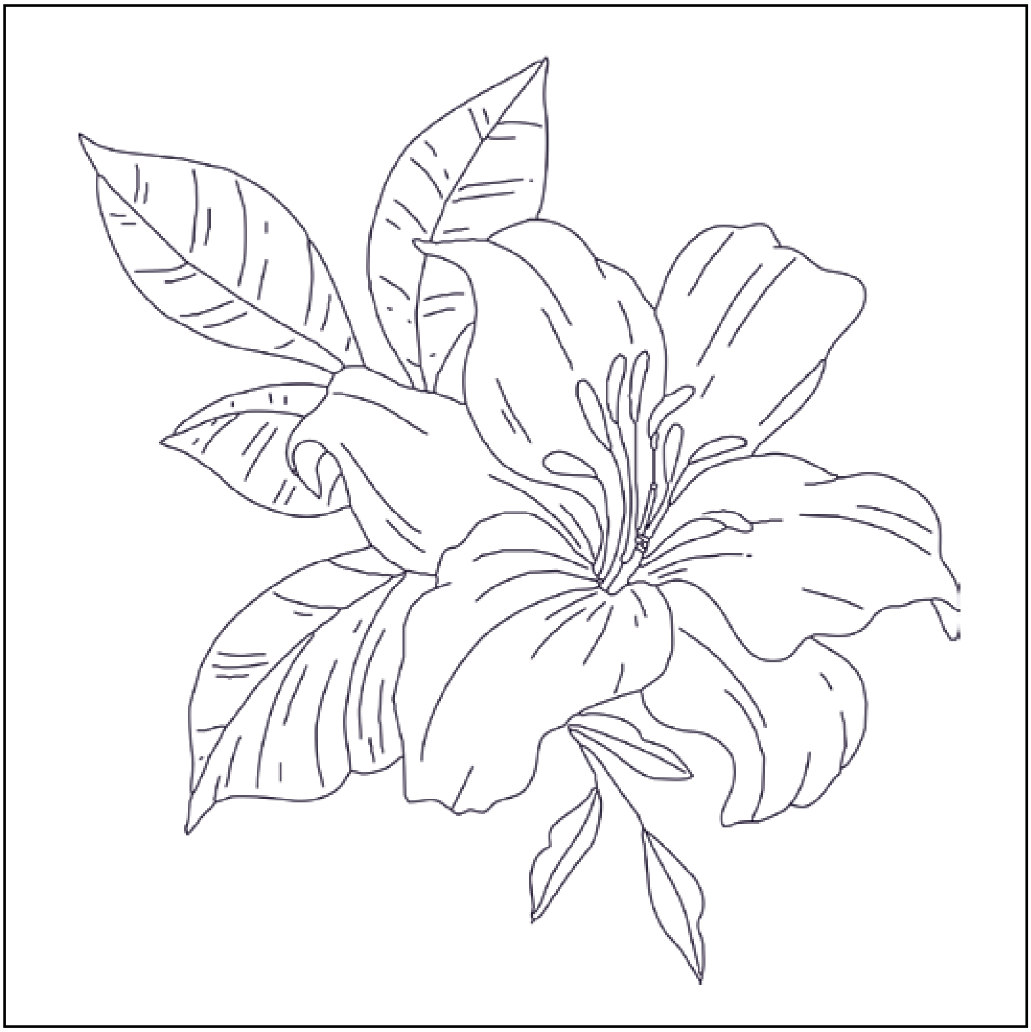

नाम : .... आयु : ....

पिता का नाम : ....

पूरा पता : ....

....

.... पिन कोड : ....

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। अत: एक लगन लगी रहती है कि कब माह बीते और पत्रिका का नया अंक हाथों में आए। अत्यन्त बेसब्री से प्रतीक्षारत नया अंक प्राप्त होते ही जब तक मैं 'सबसे पहले' व 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' के शब्द की व्याख्या पढ़ न लूं तब तक मुझे चैन नहीं आता। तत्पश्चात् ही मैं पत्रिका परिवार के अन्य सदस्यों को पठन हेतु देता हूँ।

इसमें 'पढ़ो और हँसो' से मनोरंजन होता है तथा 'क्या आप जानते हैं?' भी ज्ञानवर्द्धक स्तम्भ है।

आशा करता हूँ कि भविष्य में यह पत्रिका और सुन्दर व ज्ञानवर्द्धक बनकर हमें लुभाती रहेगी।

– मेजर प्रकाश (करनाल)

मैं हँसती दुनिया का नियमित सदस्य हूँ। मुझे हँसती दुनयिा बहुत ही अच्छी लगती है। मैं हँसती दुनिया की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

दिसम्बर अंक पढ़ा। कहानियों में 'दिया और मोमबत्ती' (विजय जी. खत्री) एवं 'मोती जुगनू' (कल्पनाथ सिंह) आदि कहानियां पसन्द आईं।

कविताओं में 'समय की कीमत' (हरजीत निषाद) तथा 'ऐसा काम न करना' (राजकुमार जैन 'राजन') अच्छी लगीं।

यह पत्रिका बच्चों के लिए बहुत रुचिकर तथा ज्ञानवर्द्धक है।

– अजय सक्सेना (इटावा)

पहेलियों के उत्तर :

1. ताजमहल, 2. सुरहुरपुर, 3. फेरा न गया, 4. माचिस, 5. हरी लाल, 6. जामुन, 7. बहू (पुत्र की पत्नी), 8. नारियल, 9. गुमा, 10. बीजापुर।

बाल गीत : रामानुज त्रिपाठी

नई सुबह

ज्योति कलश छलका पूरब में,
हँसकर धरा नहाई।
नई सुबह फिर आई।

एक नई छवि लिए गोद में,
उतरी ऊषा भरी मोद में।
और नये सूरज की नभ में,
नई किरण मुस्काई।
नई सुबह फिर आई।

खिले नये फूल उपवन में,
नई गंध बस गई पवन में।
डाल-डाल पर एक नई,
हरियाली फिर से छाई।
नई सुबह फिर आई।

नये राग में नये तराने,
उड़कर पक्षी लगे सुनाने।
भौरों और तितलियों की फिर,
रुनझुन मन को भाई।
नई सुबह फिर आई।

नन्हें-नन्हें मुन्ने जागे,
चले खेलने, आलस त्यागे।
जिनकी मीठी किलकारी से,
गूंज उठी अंगनाई।
नई सुबह फिर आई।

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
News Divine
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
सुनो तराने
नए पुराने
Nirankari Radio
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
SOUL VIBES
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on Last Friday of every month
Voice Divine
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/1973 : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
: License No. U (DN) -23/2021-2023
: Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सत्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सत्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें : -

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सत्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।